खबर पेज 8 पर


# गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति


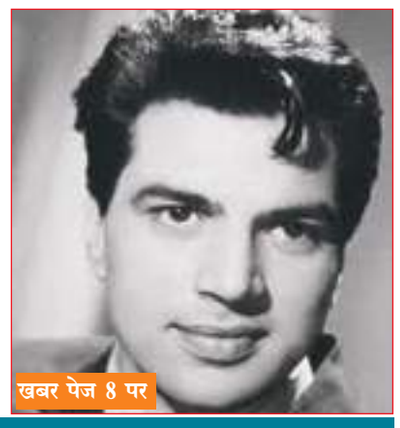
खबर पेज 8 पर


वर्ष -11 | अंक–17 | पाक्षिक समाचार पत्रिका | कोलकाता, रविवार 16 – 30 नवम्बर 2025 | मूल्यः 5 रुपये | RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata | कुल पृष्ठ – 8


## सुविचार

♦आपकी इज्ज़त तब होती है जब आपके पास कुछ ऐसा होता है जो सबके पास नहीं होता।

♦कभी यह मत सोचो कि आप अकेले हो बल्कि यह सोचो की आप अकेले ही काफी हो।

## शेरो-शायरी

वक्त से पहले बोले गए शब्द, और मौसम से पहले तोड़े गए फल दोनो ही व्यर्थ है।

---

हिम्मत कर, सब्र कर, बिखर कर भी एक दिन सवर जाएगा। यकीन कर वक्त ही तो है, जो गुजर जाएगा।

---

# एसआईआर के बाद सामने आ रहे हैं फ्रॉड

## बांग्लादेशी नागरिक ने पड़ोसी को पिता बताकर बनवाया आधार कार्ड

**निज संवाददाता :** पश्चिम बंगाल में विशेष गहन संशोधन यानी एसआईआर शुरू होने के बाद एक तरफ जहां सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस व प्रमुख विपक्षी पार्टी भाजपा के बीच राजनीति गर्म है तो वहीं, दूसरी तरफ बहुत से फ्रॉड सामने आ रहे हैं। वोटर आईडी में कहीं ससुर ही पिता बन गए हैं तो कहीं घर के मालिक ही पिता बन गए हैं। इसी बीच एक हैरान कर देने वाली खबर सामने आई है। राज्य के उत्तर 24 परगना जिले के बशीरहाट के नारायणपुर में एक बांग्लादेशी नागारिक ने अपने पड़ोसी को ही पिता बताकर न केवल वोटर आईडी बनवाया, बल्कि आधार कार्ड भी तैयार करा लिया।

इतना ही नहीं शख्स पर पीएम आवास योजना के तहत घर पाने का भी आरोप लगा है। बता दें कि उत्तर 24 परगना जिले के बशीरहाट नारायणपुर के निवासी, जिसकी पहचान जियाद दफ्तर के रूप में हुई है, उन्होंने एक ऐसी साजिश का खुलासा किया, जिसने

वोटरलिस्ट के सत्यापन प्रक्रिया को झकझोर दिया है। जियाद के मुताबिक, उनका पड़ोसी महबूर दफ्तर, जो बांग्लादेश का निवासी है, करीब 15 साल पहले बांग्लादेश से यहां आया था और बसीरहाट के नारायणपुर में परिवार के साथ रहने लगा। महबूर ने जियाद को अपना पिता बताकर वोटर आईडी कार्ड और आधार कार्ड बनाया। जियाद ने कहा-महबूर और मैं एक ही साथ काम करते हैं। एक साल पहले बैंक से पैसे निकालने के लिए मैंने उसे अपना आधार कार्ड और बाकी के कागजात दिए थे। वोट देने के समय पता चला कि महबूर मेरा बेटा बन चुका है। पड़ोसी, जियाद दफ्तर का दावा है कि इस बात का पता चलने के बाद उन्होंने प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर इसकी जानकारी दी। लेकिन कोई समाधान नहीं मिला। वहां से मैं बीडीओ ऑफिस, हर जगह मैंने छानबीन की कि कैसे मेरा बेटा चला गया। वह बांग्लादेशी है। ₹

दूसरी तरफ, इस मुद्दे को हथियार बनाकर तृणमूल-बीजेपी राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी चरम पर है। इस बीच शुक्रवार को उत्तर 24 परगना के हाड़ोआ के खलीसादी गांव से घुसपैठिए, मां-बाप और बेटे को पुलिस ने गिरफ्तार किया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, पूछताछ में पता चला कि वे तीनों बांग्लादेशी नागरिक हैं। घर, नेहालपुर, जेशोर में है। वे 7 साल पहले अवैध रूप से यहां आए थे। हाड़ोआ के विभिन्न ईंट भट्ठों में काम करते थे। शुक्रवार को, उन्हें संदिग्ध रूप से घूमते हुए देखकर संदेह होने पर पुलिस ने गिरफ्तार किया।

# राजभवन का नाम अब 'लोक भवन'

**निज संवाददाता :** राज्यपाल डॉ. सीवी आनंद बोस ने पश्चिम बंगाल में राजभवन का नाम बदल दिया है। राजभवन का नाम लोक भवन कर दिया गया है। बताया गया है कि यह नाम कोलकाता और दार्जिलिंग दोनों में लागू होगा। इसे अभी तक 'राजभवन' के नाम से जाना जाता था, लेकिन अब इसका नाम बदलकर 'लोक भवन' कर दिया गया है। बोस ने शनिवार को केंद्र सरकार के निर्देश को लागू करते हुए राजभवन का नाम बदलकर 'लोक भवन' कर दिया। राजभवन, जिसका नाम अब लोकभवन हो गया है, राज्यपाल के आधिकारिक निवास के रूप में कार्य करता है और इसमें उनका कार्यालय भी स्थित है। एक आधिकारिक अधिसूचना में, बोस ने कहा कि 27 मार्च, 2023 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राज्यपाल के अनुरोध पर, तत्कालीन राजभवन की प्रतीकात्मक चाबी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को सौंपी, जिससे जनता के राजभवन जन राजभवन के एक नए युग की शुरुआत हुई। अधिसूचना में कहा गया है 'गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 25.11.2025 को जारी किए गए पत्र के अनुसरण में, यह अधिसूचित किया जाता है कि कोलकाता स्थित 'राजभवन', फ्लैगस्टाफ हाउस और दार्जिलिंग स्थित 'राजभवन' का नाम संशोधित कर 'लोक भवन' कर दिया गया है'। यह अधिसूचना तत्काल प्रभाव से लागू है। सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए राज्यपाल डॉ.सीवी आनंद बोस ने कहा-जन राजभवन के

पीछे की अवधारणा लोगों को राजभवन के करीब लाने की आकांक्षा से प्रेरित थी। लोगों की आशाओं और सपनों, उनकी समस्याओं और उनकी अपेक्षाओं को प्राथमिकता देकर भवन को जीवंत बनाना। इसके माध्यम से, ऐतिहासिक भवन भय का प्रतीक नहीं, बल्कि सभी के लिए खुला और मानवीय बनना था। यही मूल उद्देश्य था। उन्होंने कहा, पिछले तीन वर्षों में, जन राजभवन ने जनता के लिए अनेक रचनात्मक और कल्याणकारी कार्यक्रम क्रियान्वित किए हैं। इसका एक प्रमुख आधार रहा है-ज़रूरत के समय जनता के साथ खड़ा रहना। जब भी राज्य के किसी भी कोने में हिंसा, प्राकृतिक आपदा या अत्याचार के आरोप लगे हैं, जन राजभवन जनता के द्वार पर पहुंचा है और मदद का हाथ बढ़ाया है। बोस ने आगे कहा-प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के परिवर्तनकारी नेतृत्व में, देश की जनता आज विकासोन्मुख राष्ट्र-निर्माण के पथ पर सक्रिय रूप से भाग ले रही है जिसका लक्ष्य एक विकसित भारत का निर्माण है। इसी दृष्टिकोण के अनुरूप, गृह मंत्रालय की 25 नवंबर 2025 की अधिसूचना के अनुसार, देश भर के सभी राजभवनों और राजनिवासों का नाम बदलकर क्रमशः लोक भवन और लोक निवास कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि अब से, पश्चिम बंगाल का तत्कालीन राजभवन और उसके अधिकार क्षेत्र में आने वाली सभी इमारतें अब से सार्वभौमिक रूप से ''लोक भवन'' के नाम से जानी जाएंगी।

# विवादों में उलझना भारत का स्वभाव नहीं : मोहन भागवत

**निज संवाददाता :** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि विवादों में उलझना भारत का स्वभाव नहीं है। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश की परंपरा ने हमेशा भाईचारे और सामूहिक सद्भाव पर बल दिया है। शनिवार को नागपुर में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भागवत ने कहा कि भारत की राष्ट्र की अवधारणा पश्चिमी व्याख्याओं से मौलिक रूप से अलग है। मोहन भागवत ने अपने भाषण में कहा-हमारा किसी से कोई विवाद नहीं है। हम विवादों से दूर रहते हैं, विवाद करना हमारे देश के स्वभाव में नहीं है। साथ रहना और भाईचारे को बढ़ावा देना हमारी परंपरा है। उन्होंने कहा कि दुनिया के अन्य हिस्सों का विकास संघर्ष से भरी स्थितियों में हुआ। उन्होंने आगे कहा-एक बार राय बन जाने के बाद, उस विचार के अलावा कुछ भी अस्वीकार्य हो जाता है। वे दूसरे विचारों के लिए दरवाजे बंद कर देते हैं और उसे 'वाद' कहने लगते हैं।आरएसएस प्रमुख ने कहा कि पश्चिमी देश भारत के राष्ट्र-विचार को नहीं समझ पाते, इसलिए उन्होंने इसे 'राष्ट्रवाद' कहना शुरू कर दिया। उन्होंने साफ किया-हमारी

'राष्ट्र' की अवधारणा पश्चिमी राष्ट्र के विचार से अलग है। हम राष्ट्रीयता शब्द का उपयोग करते हैं, राष्ट्रवाद का नहीं। राष्ट्र के बारे में अत्यधिक गर्व ने दो विश्व युद्धों को जन्म दिया, इसीलिए कुछ लोग राष्ट्रवाद शब्द से डरते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत की राष्ट्रीयता अहंकार या गर्व से पैदा नहीं हुई, बल्कि लोगों के बीच गहरे अंतर्संबंध और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व से उपजी है। उन्होंने ज्ञान के महत्व पर भी बल दिया और कहा कि व्यावहारिक समझ और सार्थक जीवन जीना महज सूचना से कहीं अधिक मायने रखता है।

# 7 दिसंबर को ऐतिहासिक ब्रिगेड-परेड मैदान में गीता पाठ का आयोजन

## 5 लाख श्रद्धालुओं को आने का आवाहन

***डॉक्टर अरविन्द सेठ***

सनातन परंपरा के चार भिन्न संप्रदाय के विज्ञ सन्यासियों : स्वामी जगधात्रिय दास प्रभु जी (इस्कॉन), श्रीमत स्वामी निर्गुणानंद ब्रह्मचारी जी (प्रेममंदिर आश्रम), पद्मश्री स्वामी प्रदीप्तानंद जी महाराज (भारत सेवाश्रमसंघ) एवं श्रीमत बंधुगौरव ब्रह्मचारी जी (महानाम संप्रदाय) ने सन् 2022 में पहली बार मायापुर में ''सामूहिक गीता-पाठ'' का आयोजन किया था। उस वक्त 5 हजार व्यक्तियों की उपस्थिति का अनुमान किया गया था जबकि आने वाले की संख्या 6637 थी। इस सफलता से उत्साहित होकर आप संन्यासी वर्ग ने अगले वर्ष कोलकाता में 1 लाख लोगों के साथ गीता-पाठ के आयोजन की संकल्पना की। 2023 के कोलकाता आयोजन में 1,37000 लोगों की उपस्थिति रही। अगले वर्ष 2024 में यह आयोजन सिलीगुड़ी के कावाकालीमाठ में किया गया। भक्तों की उपस्थिति 1,27000 रही। वर्तमान वर्ष 2025 में भारत की सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता के प्रसिद्ध ऐतिहासिक ब्रिगेड-परेड मैदान में 5 लाख श्रद्धालुओं का आवाहन किया गया है। गीता-पाठ आयोजन की संकल्पना के प्रमुख गौड़ीय संप्रदाय के इस्कॉन मठ से दीक्षित स्वामी जगधात्रिय दास प्रभु जी वर्तमान में ''सनातन संस्कृति संसद'' और ''श्रीसारस्वत गौड़ीय विश्व शंखघोष'' के सह-संपादक हैं। 2025 में होने वाले गीता पाठ आयोजन के मुख्य व्यवस्थापक स्वामी जी ने बताया कि इस वर्ष हम हिंदी और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में निःशुल्क गीता पाठ वितरित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा ऐसा मानना है कि एक ही ईश्वर की संतान होने के कारण अलग-अलग मत से संबंधित होने पर भी हम विश्व भातृत्व के संवाहक हैं। गीता गीता पाठ माध्यम है--समाज में इसी भातृत्व भावना के पुनर्जागरण की।

इस आयोजन में शंख ध्वनि के साथ काजी नज़रुल इस्लाम द्वारा रचित कृष्णडाक (कृष्ण का बुलावा) काव्य

*बाएं से दाए - श्री लक्ष्मीकांत संचारी जी (रंजना साड़ीज), स्वामी सर्वदानंद अवधूत जी महाराज, स्वामी जगधात्रिय दास प्रभु जी (इस्कॉन), श्रीमद् निर्गुण आनंद ब्रह्मचारी जी प्रेम मंदिर आश्रम, पद्मा श्री स्वामी प्रदीप आनंद जी महाराज भारत सेवा श्रम संघ, श्रीमद् बंधुगौरव ब्रह्मचारी जी (महानाम संप्रदाय), श्री कमल सिंह जी (प्रसिद्ध समाजसेवी)।*

पाठ भी करेंगे। आयोजन की निर्विघ्न सफलता हेतु आयोजक मंडली के प्रमुख सदस्य श्री लक्ष्मीकांत संचारी (रंजना साडीज) अपने पूर्ण समर्पण भाव के साथ प्रबंधन कार्य में लगे हुए हैं। उन्होंने बताया कि यह आयोजन सभी आयु वर्ग के मानव मात्र के लिए है। जात-पात, मजहब, धर्म, मत-संप्रदाय की सीमाओं से आगे बढ़कर भगवान श्री कृष्ण द्वारा कर्म को ही मुख्य धर्म के रूप में प्रस्तुत करने वाले इस गीता-पाठ का महत्व सामाजिक समन्वय के लिए अति विशिष्ट है। विशेष रूप से स्ट्रेस, एंग्जायटी से जूझती नई पीढ़ी के लिए गीता का चिंतन मनन किसी औषधि से कम नहीं। अपने निजी अनुभव के आधार पर उन्होंने मानसिक तनाव को कम कर समाज में समन्वय स्थापित करने हेतु युवा पीढ़ी को अधिक से अधिक संख्या में इस आयोजन से जुड़ने का आवाहन भी किया। सनातन संस्कृति संसद (पश्चिम बंगाल, भारत) की ओर से भारत की सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता के प्रसिद्ध ब्रिगेड-परेड ग्राउंड में आगामी 7 दिसंबर 2025, दिन-रविवार को 5 लाख कण्ठों से गीता - पाठ का आयोजन किया गया है। इस पुनीत आयोजन के सभापति भारत सेवाश्रम संघ बेलडांगा के संन्यासी पद्मश्री स्वामी प्रदीप्तानंद महाराज (स्वामी कार्तिक जी महाराज) हैं। सभापति महाराज जी प्रिंट और डिजिटल मीडिया के माध्यम से गीता पाठ आयोजन में पूरे विश्व के मानव मात्र को आमंत्रित करते हुए सूचित करते हैं कि यह आयोजन का चौथा वर्ष है। पिछली बार इस आयोजन में 1 लाख से अधिक लोगों ने एक साथ कृष्ण की वाणी श्रीमद् भागवत् गीता का पाठ समवेत स्वर में किया था। इस बार कोलकाता की पुण्य भूमि पर विश्व-कीर्तिमान रचना की तैयारी में संलग्न है। संभवत गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी इस आयोजन की उपस्थिति दर्ज की जा सकेगी। वर्तमान समय में भारत देश के कुछ क्षुद्र मानसिकता वाले राजनीतिक लोगों ने सनातन वैदिक संस्कृति के मनुष्यों में मतभेद पैदा करने की कुटिल मंशा से क्षेत्रीय भाषा विवाद को अत्यधिक बढ़ाने का प्रयास किया है। भाषा मतभेद को परे रख भारत के सन्यासी वर्ग ने भारत देश को योगीराज श्री कृष्ण जी की कालजयी वाणी गीता-पाठ के माध्यम से सभी राज्य के लोगों को उनकी क्षेत्रीय भाषा में धार्मिक उद्बोधन का एक सामूहिक मंच उपलब्ध कराया है। इस ऐतिहासिक, पवित्र व धार्मिक आयोजन के कार्यक्रमों के मुख्य अनुष्ठान की अध्यक्षता गीता मनीषी महामंडलेश्वर पूज्य स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज करेंगे। पद्मभूषण परम पूजनीय वात्सल्यमूर्ति साध्वी ऋतंभरा दीदी मां जी प्रधान अतिथि के रूप में आमंत्रित हैं। परम पूज्य योग ऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज और पूज्य श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी महाराज (बाबा बागेश्वर धाम सरकार) विशेष अतिथि के रूप में पधार रहे हैं। आयोजन समिति के विशेष सदस्य महानाम संप्रदाय के सचिव श्रीमद् बंधुगौरव ब्रह्मचारी ने हार्दिक शुभकामनाओं के साथ बताया कि इस भव्य आयोजन हेतु भारत के राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू, गृह मंत्री अमित शाह, प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डॉ. सी .वी आनंद बोस, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सहित सभी विधानसभा सदस्य को आयोजन समिति की ओर से आमंत्रण पत्र भेजा गया है।

इनके अलावा सभी राजनीतिक दल के मुख्य सदस्यों, न्यायालय के विशेष

न्यायाधीश और अधिवक्ताओं, उद्योग-व्यवसाय जगत के सर्वमान्य व्यापारियों, विख्यात कलाकारों और विश्वविद्यालय स्तर के गणमान्य प्रोफेसर/शिक्षण-मंडली को भी आमंत्रण-पत्र भेजा जा रहा है। स्वेच्छा से श्रमदान करने वाले कर्मठ भक्त अपने-अपने क्षेत्र में बैनर के माध्यम से सामान्य जनता को सूचित कर रहे हैं। पश्चिम-बंगाल के प्रत्येक जिले के सभी क्षेत्र के हर मोहल्ले व नुक्कड़ तक: नुक्कड़ नाटक के माध्यम से इस आयोजन की सूचना दी जा रही है। ऑटो पर लाउडस्पीकर लगाकर प्रतिदिन आयोजन की सूचना प्रसारित की जा रही है। लोगों की सुविधा के लिए 600 से अधिक बसों की व्यवस्था की जा चुकी है, जो उन्हें उनके क्षेत्र से आयोजन स्थल तक ले आने और फिर वापस उनके क्षेत्र तक पहुंचाने के प्रबंध में लगी रहेंगी।

पूरे भारतवर्ष से 2000 से अधिक साधू और संतों ने अपने आने की पूर्व सूचना आयोजन समिति को दे दी है। 14 संत नेपाल से 5 लामा संत और गीता-चर्चा करने वाले 125 बांग्लादेशी विद्वानों के आगमन की पूर्व सूचना के साथ उनके आवागमन और प्रवास की सारी व्यवस्थाएं पूर्ण कर ली गई हैं। आयोजन समिति के संयोजक कृष्ण-सेवक कमल सिंह बड़े उत्साह के साथ आश्वसत करते हैं कि संत-समाज से जितने भी लोग आवें या ईश्वरीय कृपा से 10 लाख श्रद्धालु भी आ जावें तो भी उन सभी भक्तों की यथा योग्य सेवा-व्यवस्था में किंचित मात्र भी कमी न आने देंगे। आयोजन की विशालता को देखते हुए इस बार 3 मंच तैयार किया जा रहे हैं। 1 भव्य मुख्य (मूल) मंच पार्थसारथी-मंच, 2 विशाल (सहायक) मंच यथा जगतगुरु मंच और श्री चैतन्य मंच निर्मित किए गए हैं। केंद्रीय आयोजन समिति के मुख्य संचालक श्रीमत स्वामी निर्गुणानंद महाराज जी ने मंच केवलमात्र साधू-संतों के लिए आरक्षित रखा है। सामान्य जनता या किसी भी व्यक्ति विशेष के लिए मंच पर चढ़ना निषिद्ध है। स्वामी जी प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से समूचे विश्व को सूचना देते हुए कहते हैं कि इस वर्ष श्रीमद् भागवत गीता के प्रथम अध्याय, नवम अध्याय और अष्टादश अध्याय का सामूहिक पाठ होगा। आयोजन में आने वाले सभी सामान्य जन को श्रीमद् भागवतगीता के संपूर्ण पाठ की पुस्तक उपहार रूप में निः शुल्क भेंट की जाएगी।

गंभीर समाचार की ओर से इस प्रतिनिधि द्वारा भविष्य में इसी मॉडल पर भारत के अन्य राज्यों में सामूहिक गीता-पाठ आयोजन के विषय में प्रश्न पूछने पर स्वयं स्वामी प्रदीप्तानंद महाराज जी ने बताया कि असम के मुख्यमंत्री माननीय हेमंत विश्वा शर्मा के संयोजन में विशाल सामूहिक गीता पाठ का आयोजन शीघ्र ही होने वाला है।

## गीता पाठ आयोजन के मुख्य बिंदु

1. भारत की सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता का ऐतिहासिक ब्रिगेड-परेड ग्राउंड
2. 7 दिसंबर 2025 दिन रविवार सुबह 9:00 से दोपहर 2:00 बजे तक
3. बांग्लादेशी कवि श्री नज़रुल इस्लाम की प्रसिद्ध रचना कृष्णडाक (कृष्ण को बुलावा) का काव्यमंचन
4. श्रीमद्भागवत गीता के प्रथम, नवम् और अष्टाध्यक्ष अध्याय का पाठ
5. विश्व में प्रथम बार 5 लाख मनुष्यों का समवेत स्वर में गीता-पाठ
6. आयोजन के सभापति पद्मश्री स्वामी प्रदीप्तानंद महाराज जी
7. संपूर्ण अनुष्ठानिक आयोजन की अध्यक्षता करेंगे--गीता मनीषी महामंडलेश्वर पूज्य स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज

# बंगाल में चुनावी रोल की मैपिंग को लेकर बड़ा खुलासा

## एक महीने में एसआईआर डेटा गैप 49 फीसदी से घटकर हो गया 4.3 फीसदी

**निज संवाददाता :** पश्चिम बंगाल में चुनावी रोल की मैपिंग को लेकर एक बड़ा खुलासा हुआ है। मुख्य चुनाव अधिकारी मनोज अग्रवाल ने गुरुवार को बताया कि अब तक 4.3 फीसदी पंजीकृत मतदाता ऐसे हैं जिनका डेटा 2002 के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) या किसी अन्य राज्य/यूटी के चुनावी रोल से मेल नहीं खा रहा है। यह आंकड़ा चुनाव आयोग के 28 अक्टूबर के उस आकलन से काफी कम है, जिसमें कहा गया था कि पश्चिम बंगाल के 7.6 करोड़ मतदाताओं में से 49 फीसदी का डेटा 2002 के एसआईआर के बाद के रोल से लिंक नहीं हो पा रहा था। अग्रवाल ने बताया कि बुधवार तक 6 करोड़ से ज्यादा एन्यूमरेशन फॉर्म डिजिटाइज किए जा चुके थे। इनमें से करीब 26 लाख मतदाताओं का डेटा किसी भी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश के पिछले एसआईआर रोल से मैप नहीं हो पा रहा है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि एसआईआर शुरू होने से पहले, यानी 4 नवंबर से पहले, मैपिंग की दर 51 फीसदी थी। उन्होंने समझाया कि पिछले 23 सालों में पोलिंग बूथों की संख्या करीब 19,000 बढ़ गई है। साथ ही, कई मतदाता राज्य के अंदर और बाहर दूसरे विधानसभा क्षेत्रों में शिफ्ट हो गए हैं। इसी वजह से शुरुआत में मैपिंग का प्रतिशत कम था। 2002 में बंगाल में 61,531 पोलिंग बूथ थे, जो अब बढ़कर 80,681 हो गए हैं। चुनाव क्षेत्रों का परिसीमन भी एक वजह है। चुनाव आयोग के अधिकारियों ने बताया कि कोलकाता के कस्बा और मटियाबुर्ज जैसे इलाकों में शुरुआती मैपिंग दर क्रमशः 4 फीसदी और 8 फीसदी थी। अन्य नए बने निर्वाचन क्षेत्रों में भी ऐसे ही कम प्रतिशत देखे गए। अग्रवाल ने कहा कि जैसे-जैसे एसआईआर प्रक्रिया पूरी होने के करीब आ रही है, मैपिंग की दरें सुधर रही हैं। उन्होंने कहा कि यह स्वाभाविक है कि मैपिंग बढ़ेगी क्योंकि जो मतदाता नए बूथों में शिफ्ट हुए हैं, उनके एन्यूमरेशन फॉर्म में अतिरिक्त जानकारी के माध्यम से उन्हें सत्यापित डेटा में शामिल किया जा रहा है। जिन मतदाताओं का डेटा 2002 के एसआईआर रोल से गायब है क्योंकि वे तब दूसरे राज्यों में मतदाता थे, उन्हें उन जगहों के पोस्ट-एसआईआर रोल से मैप किया जा रहा है।

# एसआईआर पर घमासान के बीच सामने आया चौंकाने वाला आंकड़ा

## बांग्लादेश से सटे 9 जिलों में तेजी से बढ़े लाखों वोटर

**निज संवाददाता :** इन दिनों चुनाव आयोग की ओर से कराए जा रहे वोटर लिस्ट स्पेशल इंटेसिव रिविजन यानी एसआईआर पर राजनीति गरम है। गैर एनडीए शासित राज्यों की सरकारें और राजनीतिक दल खुलकर एसआईआर की आलोचना कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल में एसआईआर पर तलवारें खिंची हैं। बांग्लादेश के बॉर्डर पर भारत से वापस लौटने वाले बांग्लादेशियों की लाइन लगी है। इस बीच बंगाल से एक चौंकाने वाला आंकड़ा सामने आया है। 2002 से 2025 के बीच करीब 23 साल में राज्य में वोटरों की संख्या में 66 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। बंगाल में 10 जिलों में वोटरों का आंकड़ा अप्रत्याशित तौर से बढ़ा है, जिनमें 9 बांग्लादेश बॉर्डर से जुड़े हैं।

माना जा रहा है कि एसआईआर के बाद सच सामने आएगा कि अचानक लाखों की तादाद में वोटर कहां से आए। ये घुसपैठिये हैं या उत्पीड़न के शिकार हिंदू शरणार्थी, जिसका दावा टीएमसी कर रही है। चुनाव आयोग ने 2002 में स्पेशल इंटेसिव रिविजन (एसआईआर) के जरिये वोटर लिस्ट की जांच की थी। इसके बाद से पूरे देश में वोटरों के नाम जुड़ते चले गए। बीते 23 साल के दौरान बंगाल में रजिस्टर्ड वोटरों की संख्या 4.58 करोड़ से बढ़कर 7.63 करोड़ हो गई है। दो दशक पहले राज्य में 18 जिले थे, अभी 23 जिले हैं।

भारतीय निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार, इस दौरान बंगाल के 10 जिलों में वोटरों की संख्या में 70 फीसदी या उससे ज्यादा नए वोटरों के नाम जोड़े गए। इनमें 9 जिले बांग्लादेश के बॉर्डर पर बसे हैं। बीरभूम सिर्फ ऐसा जिला है, जिसकी सीमा बांग्लादेश से नहीं जुड़ती है मगर वहां 73.44 फीसदी वोट बढ़े। बड़ी बात यह कि बंगाल के उत्तर दिनाजपुर में रेकॉर्ड 105.49 फीसदी वोटर बढ़े। बांग्लादेश बॉर्डर के पास बसे मालदा में 94.58 फीसदी और मुर्शिदाबाद में 87.65 फीसदी वोटरों के नाम जोड़े गए। दक्षिण 24 परगना में बढ़े वोटरों का आंकड़ा 83.30 फीसदी रहा। जलपाईगुड़ी में 82.3 फीसदी, कूचबिहार में 76.52 फीसदी और उत्तर 24 परगना में 72.18 फीसदी वोटर बढ़ गए। नादिया जिले में 71.46 फीसदी और दक्षिण दिनाजपुर में 70.94 फीसदी वोटर बढ़े। जब बॉर्डर वाले इलाकों में वोटर लिस्ट लंबी हो रही थी, तब राजधानी कोलकाता में सिर्फ 4.6 फीसदी वोटर बढ़े। 2002 में कोलकाता में 23,00,871 मतदाता थे, जो बढ़कर सिर्फ 24,07,145 हो गए। बंगाल के 10 जिलों में लाखों वोटर कैसे बढ़े, इस पर अब राजनीतिक घमासान जारी है। बीजेपी नेता राहुल सिन्हा का आरोप है कि बांग्लादेश से आए मुस्लिम घुसपैठियों ने राजनीतिक संरक्षण हासिल कर वोटर लिस्ट में अपना नाम दर्ज कराया है। घुसपैठियों के कारण बॉर्डर से सटे 7 जिलों की डेमोग्राफी बदल गई है। दूसरी ओर सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) का दावा है कि बांग्लादेश में उत्पीड़न से परेशान होकर हिंदू शरणार्थी भी बॉर्डर क्रॉस कर भारत आए हैं। टीएमसी प्रवक्ता अरूप चक्रवर्ती ने कहा कि बांग्लादेश के हिंदू शरणार्थी उत्पीड़न के कारण चीन नहीं गए, बल्कि असम, त्रिपुरा और बंगाल में बस गए।

उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी मुस्लिम को घुसपैठिया बताकर झूठे नैरेटिव गढ़ रही है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी शरणार्थियों के वोटों के कारण ही बीजेपी को कूचबिहार, अलीपुरद्वार और वनगांव जैसे क्षेत्रों में जीत मिली। टीएमसी और वाम मोर्चा सीमावर्ती जिलों में बढ़ती आबादी के लिए मुस्लिम घुसपैठियों के साथ हिंदू शरणार्थियों और बर्थ रेट को बड़ा कारण मानती है। माकपा के नेता मोहम्मद सलीम ने कहा कि वाम मोर्चा शासन के दौरान छोटे कस्बों में विकसित किया गया, इसलिए गांवों के लोग सीधे कोलकाता नहीं आए। उन्होंने बीएसएफ की भूमिका पर भी सवाल उठाया।

सलीम ने यह भी कहा कि कुछ हिंदू शरणार्थी भी आए हैं, जिसके कारण बांग्लादेश में हिंदू आबादी कम हुई है।

# चुनाव आयोग ने बंगाल के बीएलओ की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया

## राज्य के डीजीपी को लिखा पत्र

**निज संवाददाता :** केंद्रीय चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) राजीव कुमार को पत्र लिखकर राज्यभर में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में लगे बूथ लेवल अधिकारियों (बीएलओ) और अन्य निर्वाचन अधिकारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। मालूम हो कि यह पत्र कुछ स्थानीय कार्यकर्ताओं को अज्ञात लोगों द्वारा धमकाए जाने की घटनाओं के बाद लिखा गया है। आयोग के सचिव सुजीत कुमार मिश्रा ने पत्र में लिखा- विभिन्न स्रोतों से निर्वाचन आयोग के संज्ञान में आया है कि बूथ लेवल अधिकारियों और अन्य क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की जान को खतरा है। इससे उन्हें एसआईआर के संचालन के प्रति अपने वैधानिक कर्तव्यों का निर्वहन करने में बाधा आ सकती है। पत्र में यह भी कहा गया कि आयोग एसआईआर कार्य में लगे बूथ लेवल अधिकारियों और अन्य क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की सुरक्षा के बारे में चिंतित है और इसलिए निर्देश देता है कि पुलिस अधिकारी इन अधिकारियों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी संभव उपाय करेंगे। इसके अलावा चुनाव आयोग ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात के बाद उन्हें दो टूक निर्देश दिए हैं। प्रतिनिधिमंडल को मृत, स्थानांतरित और डुप्लीकेट मतदाताओं के संबंध में बूथ स्तर के अधिकारियों (बीएलओ) को धमकाने या प्रभावित न करने का निर्देश दिया गया है। आयोग ने उनसे बीएलओ, ईआरओ और डीईओ के स्वतंत्र कामकाज में हस्तक्षेप न करने का अनुरोध किया है, क्योंकि वे प्रतिनियुक्ति पर चुनाव संबंधी कार्यों में लगे राज्य सरकार के कर्मचारी हैं। चुनाव आयोग ने प्रतिनिधिमंडल द्वारा लगाए गए सभी आशंकाओं और प्रत्येक निराधार आरोपों का बिंदुवार खंडन किया है। उन्होंने उनसे अनुरोध किया है कि वे 9 दिसंबर को ड्राफ्ट सूची साझा किए जाने के बाद ही अपने दावे और आपत्तियां प्रस्तुत करें। आयोग ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि पूरे भारत में आयोग के निर्देशों के अनुरूप स्लम क्षेत्रों, ऊंची इमारतों और गेटेड आवासीय कॉलोनियों में भी नए मतदान केंद्र स्थापित किए जाएं। इस बीच, मतदाता सूची संशोधन के तहत 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लगभग 38 करोड़ फॉर्म (74 फीसदी से अधिक) का डिजिटलीकरण किया जा चुका है. 99.43 फीसदी (50.68 करोड़) मतदाताओं को गणना फॉर्म प्राप्त हो चुके हैं, और फॉर्म जमा करने के लिए अभी 7 दिन शेष हैं।

# बंगाल चुनाव को लेकर भाजपा ने बिछाई बिसात

## ममता के गढ़ में 6 राज्यों के संगठन मंत्री 5 महीने तक डालेंगे डेरा

**निज संवाददाता :** बिहार चुनाव में प्रचंड जीत के साथ ही भाजपा ने अब पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव को लेकर अपनी बिसात बिछा दी है। विपक्ष के सत्ता वाले राज्यों की बात करें तो ममता बनर्जी के अभेद्य किले को बीजेपी अब तक नहीं भेद पाई है। 2026 में बंगाल के किले को भेदने के लिए भाजपा ने मजबूत रणनीति बनाई है। रणनीति के तहत भाजपा ने बंगाल के पांच जोन में अलग-अलग नेताओं को जिम्मेदारी देकर अगले पांच महीने के लिए बंगाल के मैदान में उतार दिया है। पश्चिम बंगाल के किले को भगवा रंगने के लिए भाजपा ने बड़ी रणनीति तैयार की है। सूत्रों के मुताबिक, भाजपा ने 6 राज्यों के संगठन मंत्रियों को बंगाल के 5 प्रमुख जोन में तैनात कर दिया है। इनके साथ 6 वरिष्ठ नेताओं को भी जिम्मेदारी दी गई है। ये सभी नेता आगामी 5 महीनों तक बंगाल में ही डेरा डालकर जमीनी रणनीति, बूथ नेटवर्क और सामाजिक समीकरणों पर काम करेंगे। राढ़बंगाल क्षेत्र में छत्तीसगढ़ के संगठन मंत्री पवन साई और उत्तराखंड के धन सिंह

रावत काम करेंगे। पुरुलिया, बांकुड़ा और बर्दवान जैसे क्षेत्र भाजपा के लिए संगठन विस्तार का बड़ा टारगेट हैं। हावड़ा, हुगली, मेदिनीपुर की जिम्मेदारी दिल्ली के संगठन मंत्री पवन राणा को दी गई है, जिसमें हावड़ा, हुगली में इनके साथ हरियाणा के वरिष्ठ नेता संजय भाटिया मौजूद रहेंगे। मेदिनीपुर में यहां यूपी सरकार के मंत्री जेपीएस राठौर को भेजा गया है। यह शुभेंदु अधिकारी की पकड़ वाला इलाका है और यहां भाजपा और टीएमसी के बीच कड़ी लड़ाई है। कोलकाता महानगर और दक्षिण 24 परगना की कमान हिमाचल के संगठन मंत्री एम. सिद्धार्थन के पास है। उनके साथ कर्नाटक के बड़े नेता और पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सी.टी. रवि को लगाया गया है। यह क्षेत्र टीएमसी का सबसे मजबूत किला है और भाजपा के लिए यहां सेंध लगाना बड़ी चुनौती होगी। नवद्वीप और उत्तर 24 परगना की जिम्मेदारी आंध्र प्रदेश के संगठन मंत्री एन.मधुकर को दी गई है। उनके साथ यूपी के वरिष्ठ नेता सुरेश राणा मौजूद रहेंगे। ये इलाका सांप्रदायिक संवेदनशीलता, बांग्लादेशी घुसपैठ के मुद्दे और टीएमसी के मजबूत वोट क्लस्टर्स के लिए जाना जाता है। उत्तर बंगाल-मालदा-मुर्शिदाबाद-सिलीगुड़ी बेल्ट और मालदा की कमान अरुणाचल प्रदेश के संगठन मंत्री अनंत नारायण मिश्र को सौंपी गई है। सिलीगुड़ी में कर्नाटक के संगठन मंत्री अरुण बिन्नाडी को भेजा गया है। सूत्रों के मुताबिक यहां पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी भी सक्रिय भूमिका निभाएंगे। भाजपा ने इस रणनीति पर अमल करना शुरू कर दिया है। ये सभी नेता लगातार बंगाल का दौरा कर रहे हैं। ये नेता सबसे पहले बूथ की रणनीति पर काम कर रहे हैं।

अक्टूबर तक राज्य में 75 फीसदी से अधिक बूथ और पन्ना प्रमुखों की बहाली पूरी कर ली गई है। 250 से ज्यादा सीटों पर एक पुरुष और एक महिला विस्तारक नियुक्त किया जा चुका है। पंचायत स्तर तक पहुंचने के लिए माइक्रो मैनेजमेंट शुरू हो गया है। पश्चिम बंगाल में चुनौती बड़ी है इसलिए भाजपा ने अपने बड़े नेताओं को यहां मैदान में उतारा है। अब ये नेता अगले 5 महीने तक लगातार चुनाव के हिसाब से क्षेत्रवार रणनीति तैयार करेंगे। विधानसभा के हिसाब से पार्टी कैसे जीत सकती है, उसको लेकर केंद्रीय नेतृत्व के साथ मजबूत रणनीति तैयार करेंगे।

# कोलकाता को मिला भारत का सबसे अच्छे 'वेगन' शहर का खिताब

## पेटा इंडिया ने मेयर फिरहाद हकीम को सौंपा अवार्ड

**निज संवाददाता :** कोलकाता को भारत का सबसे अच्छा 'वेगन' शहर चुना गया है। यह अवॉर्ड कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम को पेटा इंडिया (पीपुल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स इंडिया) ने दिया। हालांकि कई लोग इस पहचान से हैरान थे, लेकिन पेटा ने कहा कि वेगन का मतलब सिर्फ शाकाहारी खाना खाना नहीं है। शाकाहारी लोग दूध, घी और पनीर जैसे जानवरों से मिलने वाले प्रोडक्ट भी खाते हैं। लेकिन बंगाली घरों में कई ऐसी डिश होती हैं जिनमें जानवरों से मिलने वाले प्रोडक्ट का कोई निशान नहीं होता। ये सभी डिश बंगाली परंपरा बन गई हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पेटा इंडिया में सीनियर मैनेजर (वीगन और कॉर्पोरेट प्रोजेक्ट्स) किरण आहूजा ने कहा कि जब वेगन खाने की बात आती है तो बंगालियों के पास बहुत कुछ होता है। चाहे वह स्ट्रीट फूड हो या झालमुरी, या घर के बने आलू भात, बिउली दाल, मसूर दाल, पोस्तो बड़ा, आलू-पोस्तो - बंगाली खाने में बहुत सारी वेगन डिश होती हैं। इन सभी डिश में जानवरों से मिलने वाले प्रोडक्ट का कोई निशान नहीं होता है।

चिंतित लोगों का दावा है कि वीगन बनने में कोलकाता की भूमिका बहुत ज़रूरी है। कोलकाता में कई रेस्टोरेंट हैं जो प्लांट-बेस्ड

दरअसल, 'वेगन' (शुद्ध शाकाहारी) वह व्यक्ति होता है जो किसी भी प्रकार के पशु-उत्पादों का सेवन नहीं करता है। इसका मतलब है कि वे केवल पेड़-पौधों से प्राप्त खाद्य पदार्थों को खाते हैं और जानवरों से बने उत्पादों, जैसे कि दूध, दही, शहद, अंडे, चमड़े और सिल्क से परहेज करते हैं। यह सिर्फ खान-पान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवनशैली है जिसमें वे जानवरों पर परीक्षण किए गए उत्पादों का उपयोग भी नहीं करते हैं।

फूड से बिरयानी बनाते हैं। इसका स्वाद मीट जैसा होता है। कुछ डिश इस तरह से बनाई जाती हैं कि ऐसा लगता है जैसे मछली का सूप पेट में डाल दिया गया हो। इसी तरह, कोलकाता में वेगन केक और आइसक्रीम भी मिलते हैं।

# श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति द्वारा कोलकाता मेडिकल कालेज में दो जल प्याऊ का उद्घाटन

**निज संवाददाता:** कोलकाता की सुपरिचित सेवा संस्था श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति द्वारा मेडिकल कालेज में बीते 25 नवंबर को दो जल प्याऊ का उद्घाटन पश्चिम बंगाल की स्वस्थ एवं कैबिनेट मंत्री शशि पंजा के कर कमलों द्वारा किया गया। शशि पंजा का स्वागत मति पायल नाग ने किया। जोड़ासांको क्षेत्र के विधायक तथा समिति के अध्यक्ष विवेक गुप्ता की देख रेख में एवं प्रधानसचिव बिमल दीवान, सहायक-सचिव सुभाष सवालदवाला एवं पवन बंसल एवं जयंतो घोष (मेडिकल सुपरिंटेंडेंट) की उपस्थिति में किया गया। इस प्याऊ का निर्माण समाजसेवी एवं उधेगपति के के सेक्सरिया एवं सिद्धार्थ सेक्सरिया (स्वागत फर्नीचर उमा प्लास्टिक लिमिटेड)

ने अपने पूर्वज स्वर्गीय हेमलता सेक्सरिया की स्मृति में मेडिकल कॉलेज 5 न0 गेट के निकट अपने आर्थिक सहयोग से किया। दूसरा प्याऊ मेडिकल कॉलेज के 1 न0 गेट के निकट बनवाया गया। इसका निर्माण समाजसेवी एवं उधेगपति मीनाक्षी जालान (पहाड़गोमिअह टी इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड) के आर्थिक सहयोग से किया। इन प्याऊ से रोगियों एवं उनके परिवार वालो को शीतल जल का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के मार्ग दर्शक राज कुमार बोथरा के प्रयास से लगातार प्याऊ का निर्माण हो रहा है। विवेक गुप्ता के अपने चिर-परिचित दानदाताओं के आर्थिक सहयोग से कोलकाता महानगर एवं इसके उपनगरीय क्षेत्रों में और भी कई जगहों पर मशीन द्वारा संचालित शीतल जल प्याऊ का निर्माण करने की योजना है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के कार्यकर्त्ता जय प्रकाश गुप्ता, मनोज चौधरी, अरुण झुनझुनवाला, महेश काबरा, अनु मिश्रा, बंटी खंडेलवाल दिनेश खेमका, दुलार खेमका, अरिंदम सिंह आदि का सहयोग रहा।

# विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में बंगाल दूसरे नंबर पर

**निज संवाददाता :** पश्चिम बंगाल टूरिज्म की सफलता में एक नई उपलब्धि हुई है। यहां के पर्यटन केंद्र की खूबसूरती और मेहमाननवाज़ी (आतिथ्य) इस समय विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण की सूची में देश में दूसरे नंबर पर है। विदेशी पर्यटक अब बड़ी संख्या में बंगाल घूमने आ रहे हैं। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने हाल ही में इंडिया टूरिज्म डेटा कम्पेंडियम 2025 की लिस्ट जारी की है। उस सूची में पश्चिम बंगाल दूसरे नंबर पर है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने एक्स हैंडल पर इसको लेकर मैसेज दिया। उन्होंने इस सफलता के लिए पर्यटन से जुड़े लोगों को धन्यवाद दिया। मालूम हो कि बंगाल हमेशा से पर्यटन के केंद्र में रहा है। इसे टूरिज्म की सीट भी कहा जा सकता है। एक तरफ पहाड़ हैं, दार्जिलिंग की खूबसूरती है, हिमालय में लोगों का बसा रॉक सिटी है। दूसरी तरफ सुंदरबन के घने जंगलों के साथ रॉयल बंगाल टाइगर है। साथ ही, पूर्व मेदिनीपुर में दीघा का बड़ा समुद्र तट है। सिर्फ ये तीन जगहें ही नहीं, राज्य के अलग-अलग जिलों में कई पर्यटन केंद्र हैं। राज्य में तृणमूल कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बंगाल में पर्यटन पर ज़्यादा ज़ोर दिया है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर राज्य के पर्यटन केंद्र को और बेहतर बनाया गया है। कोलकाता के बाहरी इलाकों में कई पर्यटन केंद्र बनाए गए हैं। सिर्फ़ होटल ही नहीं, बल्कि पहाड़ियों में होम स्टे का बिज़नेस भी शुरू हो गया है। बताया जा रहा है कि पर्यटकों के रहने की सुविधाओं के अलावा, स्थानीय लोगों की आर्थिक और रहन-सहन के स्तर में भी सुधार हुआ है। मुख्यमंत्री ने होम स्टे पर ज़्यादा ज़ोर देने को कहा है। सूत्रों के मुताबिक, राज्य के लोग बंगाल में अलग-अलग जगहों पर घूमने पर ज़ोर दे रहे हैं। विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में बंगाल आ रहे हैं।

वे राज्य के पर्यटन केंद्रों पर घूमने के बाद मिलने वाली मेहमाननवाज़ी से बहुत खुश हैं। इतना ही नहीं, खबर है कि विदेशी लोग भी बंगाल में ज़्यादा आ रहे हैं। यह जानकारी खुद केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय ने दी है। इंडिया टूरिज्म डेटा कम्पेंडियम 2025 की लिस्ट हाल ही में जारी की गई थी। उसमें बंगाल दूसरे नंबर पर है। कोरोना के दौरान राज्य के पर्यटन केंद्र पूरी तरह से बंद थे। पर्यटन से जुड़े लोगों के सिर पर चिंता की वजह से आसमान टूट पड़ा था। बाद में जब कोरोना की पाबंदियां धीरे-धीरे हटाई गईं, तो पर्यटन केंद्र खुलने लगे। पर्यटक भी घूमने के लिए घरों से बाहर निकले। राज्य सरकार की पहल पर फेस्टिवल टूरिज्म शुरू हुआ। पर्यटन विभाग भी टूरिज्म समेत टूरिज्म के नए एरिया बनाने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए लगातार काम कर रहा है। यह सफलता उसी का नतीजा है।

# भाजपा ने शुरू की बंगाल फतह की तैयारी

## सत्ता हासिल करने को बनाया 160 सीटों का लक्ष्य

**निज संवाददाता:** राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) अभी बिहार विधानसभा चुनाव में जीत का जश्न मना रहा है, मगर बीजेपी पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के किले को भेदने में जुट गई है। पार्टी के चार रणनीतिकार पिछले कई साल से ग्राउंड रिपोर्ट को खंगाल रहे हैं। अब कद्दावर नेताओं की ड्यूटी तय किए जा रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, बीजेपी ने लंबे होमवर्क के बाद 120 विधानसभा सीटों का चिह्नित किया है, जहां ताकत झोंकने पर जीत की संभावना बन सकती है। पूर्ण बहुमत के लिए पार्टी को 40 और सीटों की जरूरत होगी। स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) के बाद इन सीटों की स्थिति साफ होगी। होमवर्क में जुटे भूपेंद्र यादव, बिप्लब देब और सुनील बंसल यूपी, महाराष्ट्र, हरियाणा समेत कई राज्यों में बीजेपी की जीत के रणनीतिकार रहे हैं। साथ में राज्य के प्रभारी अमित मालवीय भी हैं, जो पिछले 10 साल से टीएमसी को घेरते रहे हैं।गौरतलब है कि बिहार चुनाव में जीत के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि गंगा बिहार से बंगाल तक बहती है। इसी तरह बीजेपी की जीत भी बिहार से बंगाल तक फैलेगी। पीएम मोदी के इस बयान ने साफ कर दिया कि 247 चुनावी मोड में रहने वाली बीजेपी पश्चिम बंगाल में टीएमसी के किले को भेदने की तैयारी में जुट गई है। 295 विधानसभा सीटों वाली पश्चिम विधानसभा के लिए मार्च या अप्रैल 2026 में चुनाव हो सकते हैं। बीजेपी ने बंगाल में कई स्तर पर प्लानिंग की है। राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल पिछले तीन साल से बंगाल में पार्टी संगठन को मजबूत करने में जुटे हैं। उन्हें पार्टी के भीतर गुटबाजी और मतभेदों को सुलझाने की जिम्मेदारी दी गई है। वह नेताओं की बयानबाजी की निगरानी करेंगे, ताकि टीएमसी को पलटवार का मौका नहीं मिले। नेताओं की एकजुटता दिखाने के लिए भी कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। चुनाव प्रबंधन में माहिर भूपेंद्र यादव, बिपल्ब कुमार देब और अमित मालवीय को बूथ स्तर पर होने वाली तैयारियों में लगाया गया है। इस तिकड़ी को विधानसभा के हिसाब से मुद्दे तलाशने, जिताऊ कैंडिडेट की स्क्रीनिंग, कार्यकर्ताओं से बातचीत और ग्राउंड से मिलने फीडबैक की जिम्मेदारी भी दी गई है। महिलाओं के बीच लोकप्रिय ममता बनर्जी की पॉपुलर लक्ष्मी भंडार योजना की काट के लिए रणनीति बनाने में भी दिग्गज नेताओं को लगाया है। पार्टी के सूत्रों ने बताया कि पश्चिम बंगाल में 91,000 बूथों में से लगभग 70,000 पर बूथ समितियां गठित की जा चुकी हैं। आने वाले तीन महीनों में सभी बूथों के लिए कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारी तय कर दी जाएगी। फिर केंद्र और अन्य राज्यों के नेताओं, मंत्रियों और स्टार चेहरों को पश्चिम बंगाल भेजा जाएगा। बताया जाता है कि बीजेपी का वॉर रूम जल्द ही जिलों के हिसाब तैयार हो जाएगा और एक बड़े नेता को कोर्डिनेशन की जिम्मेदारी दी जाएगी। पश्चिम बंगाल में अभी स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) की प्रक्रिया चल रही है। बीजेपी नेताओं का कहना है एसआईआर के बाद स्थिति साफ हो जाएगी। अभी पिछले लोकसभा और विधानसभा चुनावों के अनुभव के आधार पर 120 सीटों के लिए प्लानिंग की जा रही है। पार्टी का मानना है कि एसआईआर के बाद लेफ्ट पार्टियों और टीएमसी के साइंटिफिक रिगिंग का माहौल भी खत्म हो जाएगा और तस्वीर साफ हो जाएगी। नेताओं का आरोप है कि टीएमसी मृत और रिपीट वोटरों के नाम पर वोट डालकर चुनाव में फायदा उठाती रही है। बीजेपी 2026 के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में महिला सुरक्षा को बड़ा मुद्दा बनाएगी। आरजी कर, दुर्गापुर मेडिकल कॉलेज और लॉ कॉलेज में हुई रेप की घटनाओं को प्रमुखता से उठाया जाएगा। इसके अलावा रोजगार, उद्योगों की कमी, पलायन और खराब अर्थव्यवस्था भी बड़े मुद्दे होंगे। लक्ष्मी भंडार स्कीम के जवाब में बिहार में 1.5 करोड़ महिलाओं को रोजगार के लिए 10,000 रुपये देने की योजना को प्रचारित किया जाएगा। पिछले विधानसभा चुनाव से सबक लेते हुए बीजेपी ने ममता बनर्जी को सीधे-सीधे टारगेट नहीं करने का फैसला किया है। इसके बजाय पार्टी के नेता वंशवाद की राजनीति और भ्रष्टाचार पर हमला करेंगी।

# परिवहन विभाग ने लिया फैसला

## आग से बचाव के लिए सरकारी बसों में लगेंगे स्वचालित अग्निशामक यंत्र

**निज संवाददाता :** राज्य में सरकारी बसों में बार-बार आग लगने की घटनाओं से परिवहन विभाग चिंतित है। गनीमत यह है कि अभी तक कोई बड़ी जनहानि नहीं हुई है, लेकिन कई बसों के आग की चपेट में आने से यात्रियों की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। ऐसे में, राज्य सरकार ने सरकारी बसों में और आधुनिक प्रणालियां लगाकर आग के खतरे को कम करने की पहल की है। यह निर्णय लिया गया है कि सभी नई खरीदी गई सरकारी बसों में स्वचालित अग्निशामक यंत्र लगाए जाएंगे।

हाल ही में राज्य के परिवहन मंत्री स्नेहाशीष चक्रवर्ती, परिवहन सचिव सौमित्र मोहन और डब्ल्यूबीटीसी, एसबीएसटीसी और एनबीएसटीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशकों की उपस्थिति में एक महत्वपूर्ण बैठक हुई।

इस बैठक में बसों के रखरखाव पर विस्तृत चर्चा हुई। क्योंकि, पिछली अधिकांश आग लगने की घटनाओं में रखरखाव संबंधी खामियां मुख्य कारण बनकर उभरी हैं। इसलिए, रखरखाव कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया गया है। इसी प्रकार, आपातकालीन स्थितियों में यात्रियों को तुरंत सुरक्षित निकालने के लिए ड्राइवरों और कंडक्टरों को भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

परिवहन विभाग के सूत्रों के अनुसार, अगर किसी कारणवश बस में आग लग जाती है, तो यह आधुनिक उपकरण बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के आग का पता लगाकर कुछ ही सेकंड में उसे बुझाना शुरू कर देगा। इससे आग फैलने और नुकसान का खतरा काफी कम हो जाएगा। साथ ही, यात्रियों की सुरक्षा भी बढ़ेगी। प्रत्येक उपकरण की कीमत लगभग डेढ़ लाख रुपए बताई जा रही है। विभाग ने आग के खतरे को कम करने के लिए बस की संरचना पर भी विचार किया है। परिवहन विभाग के एक अधिकारी ने बताया-आने वाले दिनों में फाइबर बॉडी की बजाय एल्युमीनियम बॉडी वाली बसें खरीदने पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाएगा, क्योंकि आग लगने पर इन्हें अपेक्षाकृत कम नुकसान होता है। इसके अलावा, प्रत्येक डिपो को बस को सड़क पर उतारने से पहले हर बार विस्तृत जाँच अनिवार्य करने के निर्देश दिए गए हैं। राज्य सरकार जल्द ही बसों के रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा के लिए एक नया एसओपी (मानक संचालन प्रोटोकॉल) तैयार करेगी। भविष्य में, सभी सरकारी बसों का रखरखाव इसी तरह किया जाएगा। ज़रूरत पड़ने पर, वर्तमान में बसों की मरम्मत कर रही निजी कंपनियों को भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा।

हालांकि, पुरानी सरकारी बसों में स्वचालित अग्निशामक यंत्र नहीं लगाए जाएंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि ज़्यादातर बसें सात-आठ साल से ज़्यादा पुरानी हैं और अगले कुछ सालों में कबाड़ में मिल सकती हैं। विभाग का मानना है कि इन बसों में साधारण अग्निशामक यंत्र होने के कारण ज़्यादा पैसा खर्च करने की ज़रूरत नहीं है। प्रशासन को उम्मीद है कि इस नई पहल से सरकारी बसों में आग लगने की घटनाओं में काफ़ी कमी आएगी।

# बंगाल विधानसभा चुनाव में मोदी की जनसभा को लेकर भाजपा का नया दांव

**निज संवाददाता :** बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव में प्रचार के लिए भाजपा ने नई नीति बनाई है। यह नई नीति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा किए जाने वाले चुनाव प्रचार को लेकर है। बता दें कि चुनाव प्रचार में मोदी मुख्य चेहरा होंगे। इसलिए, भाजपा उनका ओवरयूज़ करके उनकी इमेज खराब नहीं करना चाहती। 2026 के विधानसभा चुनावों के प्रचार में प्रधानमंत्री मोदी बंगाल में जो जनसभाएं करेंगे, वे पूरे राज्य में भाजपा का चुनावी संदेश पहुंचाएंगी। जनसभा के मंच से मोदी के अलग-अलग बयान और घोषणाएं अलग-अलग स्तर पर नेताओं और कार्यकर्ताओं के मुंह में गूंजती रहेंगी। लेकिन इस बार, भाजपा जान-बूझकर यह पक्का करने की कोशिश कर रही है कि मुख्य आवाज़ से ज़्यादा इसकी गूंज सुनाई दे। बंगाल में मोदी का चुनाव प्रचार दिसंबर से शुरू होने की उम्मीद है। भाजपा सूत्रों का कहना है कि मोदी संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान शनिवार या रविवार को जनसभा के लिए पश्चिम बंगाल आ रहे हैं। भाजपा के एक सूत्र का यह भी दावा है कि वे दिसंबर से चुनाव कैंपेन खत्म होने तक बंगाल में कुल 14-15 सभाएं करेंगे। बंगाल में चुनावों की घोषणा होने में अभी कम से कम तीन महीने बाकी हैं। चुनाव का पूरा चरण पूरा होने में दो से ढाई महीने लग सकते हैं। इसलिए अगर कोई पार्टी दिसंबर से अपनी चुनावी रैलियां या कैंपेन शुरू करती है, तो वह चरण लगभग पांच महीने तक चलेगा। भाजपा के मौजूदा प्लान के मुताबिक, मोदी उन पांच महीनों में ज़्यादा से ज़्यादा 15 रैलियां करेंगे। उससे ज़्यादा नहीं।गौरतलब है कि 2021 के विधानसभा चुनाव में मोदी के इर्द-गिर्द भाजपा की बयानबाजी इससे कहीं ज़्यादा थी। भाजपा ने ऐलान किया था कि मोदी पूरे राज्य में लगभग 40 रैलियां करेंगे। ब्रिगेड में मोदी की रैलियां, ज़िलों में मोदी की रैलियां, दूर-दराज के इलाकों में मोदी की रैलियां, मोदी के रोड शोभाजपा का पूरा कैंपेन मोदी-सेंट्रिक और मोदी-सेंट्रिक था। राज्य भाजपा के सीनियर और जूनियर नेता उस प्लान को कारपेट बॉम्बिंग कह रहे थे। यानी, दुश्मन के इलाके में कम

दूरी पर फाइटर जेट से एक साथ कई बम गिराना। भाजपा खुद देख चुकी है कि कारपेट बॉम्बिंग से ममता बनर्जी का किला नहीं गिराया जा सका। भाजपा के अंदर इस बात पर भी चर्चा होती रही है कि क्या मोदी को किसी खास राज्य के चुनाव में कठपुतली की तरह इस्तेमाल किया जाना चाहिए था। हालांकि, इस बारे में किसी ने खुलकर कुछ नहीं कहा है। लेकिन, सिर्फ पश्चिम बंगाल ही नहीं, बल्कि दूसरे राज्यों के चुनावों में भी मोदी-सभा हथियार का इस्तेमाल करने का फैसला पिछले साल कई विधानसभा चुनावों में भाजपा के कैंपेन से साफ है। 2014 या 2019 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में मोदी ने जितनी रैलियां की थीं, उतनी 2024 में नहीं की गईं। पिछले साल महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्य में हुए विधानसभा चुनावों में मोदी ने सिर्फ नौ पब्लिक मीटिंग कीं। हरियाणा छोटा राज्य होने के बावजूद, मोदी ने 2014 में वहां 10 पब्लिक मीटिंग कीं। 2024 में उन्होंने सिर्फ चार कीं। भाजपा ने दोनों राज्यों में पहले से ज्यादा सीटें जीतकर सत्ता बरकरार रखी है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, क्या पश्चिम बंगाल के मामले में मोदी को कठपुतली की तरह इस्तेमाल करने की पॉलिसी है? प्रदेश भाजपा अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य यह मानने को तैयार नहीं हैं कि इस मामले पर कोई फैसला हुआ है। उनके शब्दों में-पहली बात, अभी तक इस पर कोई फैसला नहीं हुआ है कि प्रधानमंत्री कितनी पब्लिक मीटिंग करेंगे। उन्होंने कहा-दूसरी बात, कोई भी राजनीतिक पार्टी अपनी राजनीतिक रणनीति पब्लिक में नहीं बताती। इसलिए, इस पर कमेंट करने का कोई सवाल ही नहीं है कि प्रधानमंत्री पश्चिम बंगाल में कितनी मीटिंग करेंगे, कौन से प्रोग्राम करेंगे। लेकिन मोदीजी 21 मीटिंग करें या 12,2026 में तृणमूल कांग्रेस का पश्चिम बंगाल से जाना तय है। पुरानी भाजपा के नाम से मशहूर एक प्रदेश स्तर के नेता ने बताया-नरेंद्र मोदी पार्टी का सबसे पॉपुलर चेहरा हैं। यह भी ध्यान रखना ज़रूरी है कि इस स्तर के नेताओं की जो पब्लिक अपील की पावर है, वह किसी भी तरह से डैमेज न हो। अगर सभाओं की संख्या बहुत ज़्यादा हो जाती है, तो हर जगह कहने के लिए कुछ नया नहीं बचता। एक के बाद एक सभा में जाकर वही बात कहनी पड़ती है। इससे उनकी शान को नुकसान होता है। दूसरे शब्दों में, भाजपा का मकसद पूरे चुनाव के दौरान मोदी की शान को बनाए रखना है। मोदी जो बातें कम सभाओं में बोलेंगे, वही बातें राज्य भर में अलग-अलग स्तर पर भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं के मुंह से निकलेंगी।

# बंगाल विस चुनाव में महिला रोजगार के सहारे सत्ता हासिल करने की रणनीति

## ममता की कन्याश्री व रूपश्री योजना की तर्ज पर भाजपा कर सकती है नई स्कीम का ऐलान

**निज संवाददाता :** बिहार में मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना काफी चर्चा में आ गई है। अभी संपन्न हुए बिहार विधानसभा चुनाव में इस योजना ने न सिर्फ नीतीश कुमार को एक बार फिर से सत्ता में काबिज होने का मौका दिया बल्कि भाजपा को बिहार की सबसे बड़ी पार्टी बनाया। शायद इसीलिए इस योजना को बिहार की चुनावी राजनीति का रुख मोड़ने वाली योजना कहा जा रहा है जिसमें महिलाओं के अकाउंट में 10 हजार रुपए डाले गए, वो भी एक मुश्त। भले ही जेडीयू के लिए बिहार में जीत के साथ आगे का सफर थोड़ा थम गया हो, लेकिन भाजपा के लिए यह एक शुरुआत हो सकती है।

इसका कारण भी है। महिला रोजगार योजना के तहत 10 हजार रुपए महिलाओं को देने का ऐलान आने वाले दूसरे राज्यों के चुनावों में भी हो सकता है। मौजूदा समय में भाजपा की नजर पश्चिम बंगाल की राजनीति पर है। जिसका पिछले विधानसभा चुनावों में काफी अच्छा प्रदर्शन जरूर था, लेकिन सत्ता से दूर थी। बंगाल की सत्ता हासिल करने के लिए भाजपा महिला रोजगार योजना का ऐलान कर सकती है।

भाजपा की इस योजना को टीएमसी सरकार की योजनाओं से टकराना पड़ सकता है। पश्चिम बंगाल में काफी समय से महिलाओं को लड़कियों के लिए तीन योजनाएं चल रही हैं। जिनके तहत पैसा सीधे अकाउंट में ट्रांसफर किया जाता है। ये स्कीम्स खासकर गरीब महिलाओं को परिवारों के लिए हैं। जिसमें कन्याश्री योजना, रूपश्री योजना और लक्ष्मी भंडार शामिल हैं।

**कन्याश्री योजना**

पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ने साल 2013 में इस स्कीम की शुरुआत की थी। पहले इस स्कीम की शुरुआत लड़कियों की प्राइमरी और सेकंडरी एजुकेशन में मदद करने के लिए की गई थी। जिसके बाद इस स्कीम को ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट तक बढ़ा दिया गया। वैसे इस स्कीम को लाने का एक और उद्देश्य यह भी था कि बंगाल में बाल विवाह को रोका जाए।

इस योजना में पहले फेज के तहत 13 से 18 साल की बच्चियों को हर साल 1,000 रुपए दिए जाते हैं। उसके बाद दूसरे फेज में 18 या 19 साल मी लड़कियों को हायर एजुकेशन के लिए 25 हजार रुपए की स्कॉलरशिप दी जाती है। तीसरे फेज में 19 साल से अधिक उम्र की लड़की को जो अविवाहित हो और आर्ट्स की पढ़ाई कर रही हो हर महीने 2000 रुपए और साइंस की पढ़ाई करने वाली को 2500 रुपए दिए जाते हैं।

वित्त वर्ष 2025-26 के बजट को देखें तो अब तक इस स्कीम से लगभग 1 करोड़ लाभार्थियों को फायदा पहुंचाया जा चुका है। वित्त वर्ष 2024-25 में, 15.75 लाख लड़कियों ने इस योजना के 1000 रुपए के वार्षिक छात्रवृत्ति घटक में नामांकन कराया और 2.01 लाख लड़कियों को 25,000 रुपए के एकमुश्त अनुदान के लिए नामांकित किया गया। इस साल इस स्कीम के लिए 593.51 करोड़ रुपए जारी किए गए हैं।

**रूपश्री योजना**

रूपश्री योजना को बंगाल सरकार ने विधानसभा में 2018-19 के बजट में रखा और पास करा कराया गया। पश्चिम बंगाल सरकार ने राज्य में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए रूपश्री योजना शुरू की हुई है। इस योजना के तहत, सरकार आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को उनकी बेटियों की शादी के समय 25,000 रुपए की एकमुश्त वित्तीय सहायता देती है।

पश्चिम बंगाल सरकार ने इस योजना के लिए 1,500 करोड़ रुपये का बजटीय आवंटन किया है। रूपश्री योजना के तहत अनुदान से राज्य के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लगभग 6 लाख लड़कियों को मदद मिल रही है। वर्ष 2024-25 में, रूपश्री योजना का लाभ 2.08 लाख लाभार्थियों तक पहुंचा, जिसमें कुल 504.25 करोड़ का डिस्ट्रीब्यूट किया गया।

**लक्ष्मी भंडार योजना**

''लक्ष्मी भंडार'' योजना राज्य सरकार द्वारा फरवरी 2021 में शुरू की गई एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। पश्चिम बंगाल की वित्त मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने राज्य विधानसभा में बजट पेश करते हुए कहा था कि महिलाओं को मासिक आय प्रदान करने के उद्देश्य से पश्चिम बंगाल सरकार की 'लक्ष्मी भंडार' ने अपने लाभार्थियों की संख्या 2023-24 में 1.98 करोड़ से बढ़ाकर 2024-25 में 2.21 करोड़ कर दी है। 2024-25 में, सरकार ने इस योजना के तहत 19,385.39 करोड़ खर्च किए हैं और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों के लिए मासिक वित्तीय सहायता 1000 रुपए से बढ़ाकर 1,200 रुपए कर दी है, जबकि अन्य श्रेणियों की महिलाओं के लिए 500 रुपए से बढ़ाकर 1,000 रुपए कर दी है।

**महिलाओं के लिए 38,762.03 करोड़ का बजट**

वित्त वर्ष 2025-26 के लिए बंगाल की ममता सरकार ने महिला एवं बाल विकास के लिए काफी मोटा बजट रखा है। आंकड़ों के अनुसार महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण विभाग के लिए, सरकार ने वर्ष 2025-26 के लिए 38,762.03 करोड़ रुपए आवंटित करने का प्रस्ताव रखा था। वर्ष 2024-25 के दौरान, सरकार ने इस विभाग के लिए 26,590.45 करोड़ रुपए आवंटित किए थे। इसका मतलब है कि इस वित्त वर्ष में 12,171.58 करोड़ रुपए ज्यादा आवंटित किए गए हैं।

# बिजली गिरने से बचाव के लिए बड़ा कदम

## वन विभाग ने दक्षिण बंगाल में 75 हज़ार ताड़ के पेड़ लगाने की पहल की

**निज संवाददाता :** ग्रामीण बंगाल की एक जानी-पहचानी तस्वीर, सड़कों के किनारे, खेतों में या तालाबों के किनारे ऊंचे खड़े ताड़ के पेड़ों की कतारें। कभी यह दृश्य ग्रामीण इलाकों की एक सामान्य विशेषता हुआ करती थी। लेकिन समय के साथ, बिना किसी कारण के पेड़ों की कटाई का चलन, शहरीकरण और कृषि भूमि के विस्तार ने ताड़ के पेड़ों की संख्या कम करना शुरू कर दिया है। और इसका सीधा परिणाम यह है कि दक्षिण बंगाल के जिलों में बिजली गिरने से होने वाली मौतों की संख्या साल-दर-साल बढ़ती जा रही है। इस चिंताजनक स्थिति को बदलने के लिए राज्य के वन विभाग ने एक बड़ी पहल की है।

आगामी मानसून में दक्षिण बंगाल के चार जिलों में लगभग 75 हज़ार ताड़ के पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। वन विभाग के सूत्रों के अनुसार, पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर कुल 300 किलोमीटर सड़कों के दोनों ओर चरणों में ताड़ के पौधे लगाने का काम शुरू हो गया है। मुख्य वनपाल (दक्षिण पश्चिम सर्कल) विद्युत सरकार ने बताया कि बांकुड़ा, पुरुलिया, बीरभूम और पूर्वी बर्दवान के चार जिलों में बड़े पैमाने पर ताड़ के पेड़ लगाने की योजना को अंतिम रूप दे दिया गया है। वन विशेषज्ञों के अनुसार, ताड़ के पेड़ प्राकृतिक रूप से बिजली गिरने से बचाने में बहुत प्रभावी होते हैं। इनकी ऊंचाई आमतौर पर 100 फीट से अधिक होती है और इनकी जड़ें मिट्टी में गहराई तक जाती हैं। बिजली गिरने के दौरान, ताड़ के पेड़ प्राकृतिक अर्थिंग की तरह काम करते हैं और बिजली को मिट्टी में गहराई तक पहुंचाते हैं। परिणामस्वरूप, आसपास के लोग और घर अपेक्षाकृत सुरक्षित रहते हैं। इसलिए, प्रशासन को लगता है कि बिजली गिरने से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों, खासकर स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों और आबादी वाले क्षेत्रों के आसपास ताड़ के पेड़ लगाना आवश्यक है। वन विभाग के सूत्रों के अनुसार, बांकुड़ा के मध्य सर्कल, पुरुलिया के दक्षिण पश्चिम सर्कल, बीरभूम और बर्दवान के दक्षिण पूर्व सर्कल में ताड़ के पेड़ लगाने की योजना को लागू करने के लिए पहले से ही कदम उठाए जा रहे हैं। बीते 23 सितंबर को राज्य के मुख्य वन अधिकारी (वित्त) और परियोजना के नोडल अधिकारी राजू दास ने तीनों सर्किल के अधिकारियों के साथ एक वर्चुअल बैठक में विस्तृत निर्देश दिए। पुरुलिया और बांकुड़ा, दो जिलों में बिजली गिरने से सबसे ज्यादा मौतें होती हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, दक्षिण बंगाल के कुछ जिलों में हर साल 60 से 70 लोग मर जाते हैं। इसका एक कारण ताड़ और खजूर के पेड़ों की संख्या में तेजी से गिरावट है। योजना के अनुसार, बांकुड़ा में 150 किलोमीटर, पुरुलिया में 100 किलोमीटर और बीरभूम और बर्दवान में 50 किलोमीटर की सड़कों पर चार मीटर के अंतराल पर ताड़ के पौधे लगाए जाएंगे। सड़कों के किनारे ऐसे स्थानों को चुना जा रहा है जो वन भूमि का हिस्सा नहीं हैं, ताकि पौधों की सुरक्षा और पालन-पोषण का काम अपेक्षाकृत आसान हो जाए। पौधे बनाने के लिए बड़ी संख्या में बीज पहले ही एकत्र किए जा चुके हैं।

**हल करो हीरो बनो का उत्तर**

1.कल्पना चावला, 2.राज्य सभा, 3.खुशवंत सिंह, 4.चेनाब, 5.कंगारू चूहा, 6.14 सितंबर

## संपादकीय

# जुवेनाइल जस्टिस: कानूनी इरादे और लागू करने के बीच बड़ा फर्क

जुवेनाइल जस्टिस (किशोर न्याय) बच्चों की देखरेख, संरक्षण और पुनर्वास से संबंधित कानूनी प्रणाली है, जो 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों पर लागू होती है। भारत में, मुख्य कानून किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 है, जो किशोरों के अपराध से निपटने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है। इसका लक्ष्य बच्चों को सुधारना और उन्हें मुख्यधारा में वापस लाना है, बजाय कि उन्हें केवल दंडित करने के। एक दशक पहले यह कानून इस मकसद से बनाया गया था ताकि कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चों के लिए देखभाल वाला नज़रिया पक्का किया जा सके। इसका मकसद बड़ों के कानूनों से अलग बच्चों के लिए अच्छा होना था। लेकिन दिक्कत यह है कि इसके बनने के दस साल बाद भी, कानूनी इरादे और उसे लागू करने के बीच एक बड़ा अंतर दिखता है। हाल ही में इंडिया जस्टिस रिपोर्ट की स्टडी का यही संदेश है, जिसका नाम है ''जुवेनाइल जस्टिस और कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चे: फ्रंटलाइन पर क्षमता का एक अध्ययन''। यह दिखाता है कि सिस्टम में डेटा साफ़ नहीं है : स्टडी के लिए पूरे भारत से डेटा इकट्ठा करने के लिए 250 सूचना के अधिकार के एप्लीकेशन की ज़रूरत थी। लेकिन जो जानकारी मिली वह पूरी नहीं थी। चूंकि जुवेनाइल जस्टिस के मामलों का कोई सेंट्रल रिपॉजिटरी नहीं है,इसलिए डेटा ट्रांसपेरेंसी की ज़रूरत सबसे ज़्यादा है। इसके अलावा, अक्टूबर 2023 के आखिर में 50,000 से ज़्यादा बच्चे इंसाफ़ का इंतज़ार कर रहे थे। यह एक्ट के मुख्य मकसद के बिल्कुल खिलाफ़ है, जिसका मकसद यह पक्का करना है कि बच्चों के केस जल्दी निपटाए जाएं ताकि उनकी इज्ज़त को ठेस न पहुंचे और उन्हें सिस्टम में बेसहारा न छोड़ा जाए। फिर भी बच्चों को बड़े अंडर-ट्रायल कैदियों की तरह छोड़ दिया जाता है, जिससे पता चलता है कि इस लापरवाही के पीछे का रवैया भी अलग नहीं है। यह कहना काफी नहीं है कि सिस्टम जूझ रहा है। कोई भी सिस्टम इंसानों द्वारा चलाया जाता है और अगर यह बच्चों को फेल कर रहा है, तो इसके लिए इसके पीछे के अधिकारियों को ज़िम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। नहीं तो यह समझाना मुमकिन नहीं है कि 470 जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड में से 111 में एक प्रिंसिपल मजिस्ट्रेट और दो सोशल वर्कर की पूरी टीम क्यों नहीं है, कुछ राज्यों में बड़े टीनएजर्स के लिए 'सेफ्टी की जगहें' क्यों नहीं हैं, 437 बोर्ड में से 30 फीसदी के पास लीगल सर्विस क्लिनिक क्यों नहीं है, लगभग 80 फीसदी चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूशन में कोई मेडिकल स्टाफ क्यों नहीं है या बोर्ड ने सीसीआई के 1,992 के बजाय सिर्फ 810 ज़रूरी इंस्पेक्शन क्यों किए। और ये नतीजे अधूरे डेटा से हैं क्योंकि इंडिया जस्टिस रिपोर्ट को सभी राज्यों से जवाब नहीं मिले। यह रिपोर्ट बहुत निराशाजनक है क्योंकि यह दिखाती है कि बच्चों के अधिकारों और संवेदनशीलता की परवाह न करने की भारतीय आदत कानूनी क्षेत्र में भी फैल गई है। राज्य सरकारें और जुवेनाइल जस्टिस सिस्टम चलाने वाले लोग, सभी इस नाकामी के लिए बराबर के जिम्मेदार हैं।

# नीतीश का सुशासन मॉडल अब भाजपा की कसौटी पर

## सम्राट चौधरी की बड़ी परीक्षा शुरू

*बिहार की राजनीति अब नए सिरे से परिभाषित हो रही है। गृह मंत्रालय भाजपा के नियंत्रण में आने से स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि राज्य में अपराध नियंत्रण, जातीय-सामाजिक संतुलन और राजनीतिक शक्ति का नया समीकरण बन गया है। आने वाले समय में सम्राट चौधरी के नेतृत्व में प्रशासन और सियासत दोनों में नए मानक स्थापित होंगे। यदि वे इस चुनौती में सफल रहते हैं, तो बिहार में उनका प्रभाव नीतीश कुमार की छाया से आगे बढ़कर नए राजनीतिक समीकरण बनाएगा। उनकी भूमिका केवल गृह मंत्री की नहीं, बल्कि बिहार की राजनीति में स्थायी और निर्णायक शक्ति केंद्र के रूप में होगी।*

***स्वदेश कुमार***

बिहार की राजनीति ने एक नया मोड़ ले लिया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भले ही दसवीं बार पद पर आसीन हुए हैं, लेकिन असली सत्ता का केंद्र अब भाजपा के हाथ में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। पटना में हाल ही में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में 26 मंत्रियों ने शपथ ली, जिनमें 14 भाजपा और केवल 8 जेडीयू के प्रतिनिधि थे। यह संख्या-बदलाव सत्ता संतुलन में भाजपा की बढ़ती पकड़ को स्पष्ट करता है। मंच पर यह दृश्य साफ था कि अब सत्ता का असली असर भाजपा के हाथ में है। सबसे बड़ा संकेत तब मिला जब गृह मंत्रालय, जिसे नीतीश कुमार ने पिछले लगभग 20 साल तक स्वयं संभाला, अब भाजपा को सौंपा गया। डिप्टी मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी अब इस संवेदनशील विभाग के प्रमुख हैं। गृह मंत्रालय का नियंत्रण केवल पुलिस और कानून-व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक और प्रशासनिक शक्ति का प्रतीक बन चुका है। अब राज्य में अपराध नियंत्रण, इंटेलिजेंस ऑपरेशन और सुरक्षा मामलों में भाजपा का सीधा प्रभाव रहेगा। सम्राट चौधरी का राजनीतिक व्यक्तित्व आक्रामक और निर्णायक माना जाता है। उनकी चुनौती यह होगी कि वे नीतीश कुमार द्वारा स्थापित सुशासन के मानकों को बनाए रखें। नीतीश ने अपने कार्यकाल में अपराध पर सख्ती, फास्ट-ट्रैक कोर्ट की स्थापना और पुलिस को स्वतंत्र कार्रवाई की सुविधा देकर जनता में विश्वास पैदा किया था। अब यही जिम्मेदारी सम्राट चौधरी के कंधों पर आ गई है। जनता की अपेक्षाएं ऊंची हैं और हर बड़ी घटना के बाद उनकी तुलना नीतीश के साथ होगी। पुलिस प्रणाली और प्रशासनिक तालमेल भी उनकी परीक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। नीतीश के समय अफसरशाही को यह विश्वास था कि शीर्ष नेतृत्व सीधे कानून-व्यवस्था पर नजर रखता है। अब सम्राट चौधरी को यह भरोसा बनाए रखना होगा कि पुलिस निष्पक्ष और सशक्त है। बड़े मामलों में त्वरित और पारदर्शी कार्रवाई उनके नेतृत्व की परीक्षा होगी भाजपा की रणनीति स्पष्ट है। बिहार में गृह मंत्रालय की पकड़ के साथ पार्टी अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत कर रही है। सम्राट चौधरी की जातीय पृष्ठभूमि, उनकी कुशवाहा जाति, पार्टी के लिए उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में रणनीतिक लाभ भी दे सकती है। बिहार में उनके प्रभाव का विस्तार उत्तर प्रदेश के चुनावी माहौल और 2029 लोकसभा चुनाव की रणनीति से जुड़ा है। जेडीयू और भाजपा के बीच सत्ता संतुलन अब स्पष्ट रूप से भाजपा की ओर झुका है।

मंत्रिमंडल में भाजपा ने 9 नए चेहरों को शामिल किया और केवल 5 पुराने मंत्रियों को पुनः स्थान दिया। यह बदलाव केवल संख्या का नहीं बल्कि राजनीतिक प्रभुत्व का संकेत है। जेडीयू को वित्त और सामान्य प्रशासन जैसे विभाग मिले हैं, जो नौकरशाही और राज्य नीति के संचालन में अहम हैं, लेकिन असली शक्ति अब गृह मंत्रालय में केंद्रित है। आने वाली चुनौतियां सम्राट चौधरी के लिए बड़ी हैं। सबसे पहली चुनौती यह है कि जनता और मीडिया उनकी तुलना नीतीश कुमार से करेंगी। हर बड़ी घटना पर यह सवाल उठेगा कि अगर नीतीश होते तो क्या होता। दूसरी चुनौती पुलिस प्रणाली और अफसरशाही के भरोसे को बनाए रखना है। नीतीश ने अपने कार्यकाल में यह सुनिश्चित किया था कि पुलिस स्वतंत्र और निष्पक्ष कार्रवाई करे। अब सम्राट को यह भरोसा बनाए रखना होगा। तीसरी चुनौती भाजपा नेतृत्व की उम्मीदों पर खरा उतरना है। उनकी सफलता सीधे पार्टी की साख और भविष्य की रणनीतियों से जुड़ी होगी। चौथी चुनौती एनडीए में संतुलन बनाए रखना है। भाजपा, जेडीयू और अन्य सहयोगी दलों के बीच कानून-व्यवस्था के मामले कभी भी विवाद का कारण बन सकते हैं। पांचवीं चुनौती सोशल मीडिया और मीडिया दबाव है। हर घटना तुरंत वायरल होगी और राजनीतिक हथियार बन सकती है। छठी चुनौती नई पहचान बनाना है। नीतीश के मॉडल को अपनाते हुए सम्राट को अपनी अलग छवि बनानी होगी। सातवीं चुनौती जातीय और सामाजिक तनाव पर नियंत्रण रखना है। बिहार में छोटे विवाद बड़े संघर्ष में बदल सकते हैं और पुलिस निष्पक्ष दिखनी चाहिए। आठवीं चुनौती जनता के भरोसे को बनाए रखना है। सुशासन की छवि कायम रखना और हर फैसले का जनहित में होना उनकी जिम्मेदारी होगी। केंद्र सरकार के दृष्टिकोण के अनुसार अवैध घुसपैठ और सीमांचल की सुरक्षा प्राथमिकता हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बिहार में अवैध घुसपैठ के खिलाफ सख्त रुख अपनाया है। यह जिम्मेदारी भी अब सम्राट चौधरी के कंधों पर है। सीमा पार की निगरानी, बीएसएफ और एनआईए के साथ तालमेल और विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया उनके कार्यकाल में लागू होगी। भाजपा का लक्ष्य साफ है। बिहार में कानून-व्यवस्था और सुरक्षा मामलों में केंद्र और राज्य का संयुक्त नियंत्रण स्थापित करना है। इसका मतलब है कि पुलिसिंग का स्वरूप बदलने वाला है। अपराध नियंत्रण में तेजी आएगी और राजनीतिक संतुलन मजबूत रहेगा। बुलडोजर और सख्त कार्रवाई के उदाहरण आने वाले समय में देखने को मिल सकते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिहार अब उत्तर प्रदेश की राह पर बढ़ सकता है। भाजपा का इरादा है कि केंद्र और राज्य के समन्वय से कानून-व्यवस्था के नए मानक स्थापित किए जाएं। यह बदलाव केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि भाजपा की राजनीतिक शक्ति को मजबूत करने वाला कदम है।सम्राट चौधरी के लिए यह चुनौती है कि वे नीतीश के मॉडल को अपनाते हुए अपनी नेतृत्व छवि बनाएं। जनता, मीडिया और राजनीतिक दल उनके हर कदम को मापेंगे। उनकी सफलता केवल गृह मंत्रालय तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि पूरे बिहार में सुशासन, सामाजिक संतुलन और भाजपा की राजनीतिक साख में परिलक्षित होगी। जनता की निगाहें अब उनके हर कदम पर हैं और उनके फैसले तय करेंगे कि बिहार का 'सुशासन मॉडल' कितना स्थायी और प्रभावशाली रहेगा।

## जानें अपना राशिफल

**मेष**

शुभ समय हो सकता है इसलिए ज्यादा से ज्यादा काम करने पर विचार करने की आवश्यकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, मन प्रसन्न रहेगा।

**वृषभ**

अद्भुत समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी नये व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है, मन शान्त रखे।

**मिथुन**

विचलित रहने वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं किसी से राय लेकर ही करे, आपसे कोई गलत फैसला हो सकता है सावधान रहे, मन वश में रखे।

**कर्क**

राहत भरा समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, पुरी नैतिकता से काम करने की जरूरत है, मन स्थिर रखे।

**सिंह**

अभिमान वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, किसी परिवार के सदस्य से मतभेद भी हो सकता है, अपने परिवार को प्रसन्न रखे, मन चंचल रहेगा।

**कन्या**

जोखिम वाला समय हो सकता है इसलिए सिर्फ काम करने पर ध्यान रखने की आवश्यकता है, किसी के चक्कर में आने से बनता काम बिगड़ सकता है, मन वश में रखे।

**तुला**

त्याग करने वाला समय हो सकता है, किसी अन्य व्यक्ति से काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, पूरी नैतिकता से काम करने की आवश्यकता है, जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन स्थिर रखे।

**वृश्चिक**

खर्चीला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, किसी के बहकावे में आने से नुकसान भी हो सकता है, अपनी सोच सकारात्मक रखने की आवश्यकता है, मन वश में रखे।

**धनु**

शानदार समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं फायदा अवश्य होगा, किसी पर भरोसा करके काम करने की आवश्यकता है, अपने विचार स्पष्ट रखकर काम करे, मन शान्त रखे।

**मकर**

मन पसंद समय हो सकता है, कोई बहुत दिनों से रुका हुआ काम आगे बढ़ सकता है प्रयास करे, किसी विदेश यात्रा करने पर विचार हो सकता है, जीवनसाथी पूरा साथ दे सकते हैं, मन में उत्साह रहेगा।

**कुंभ**

प्रतिशोध वाला समय हो सकता है इसलिए जो भी काम कर रहे हैं सोच समझकर ही करे, कोई आपको नीचा दिखाने का प्रयास कर सकता है सावधान रहे, बिना काम बाहर नहीं जाये, मन वश में रखे।

**मीन**

कीर्तिमान स्थापित करने वाला समय हो सकता है, कोई चमत्कारी काम बन सकता है, किसी बड़े व्यक्ति के साथ मिलकर काम करने पर विचार हो सकता है जो फायदेमंद होगा, मन में उत्साह रहेगा।

अकबर बादशाह दरबार लगा कर बैठे थे। तभी राघव और केशव नाम के दो व्यक्ति अपने घर के पास स्थित आम के पेड़ का मामला ले कर आए। दोनों व्यक्तियों का कहना था कि वे ही आम के पेड़ के असल मालिक हैं और दुसरा व्यक्ति झूठ बोल रहा है। चूंकि आम का पेड़ फलों से लदा होता है, इसलिए दोनों में से कोई उसपर से अपना दावा नहीं हटाना चाहता। मामले की सच्चाई जानने के लिए अकबर राघव और केशव के आसपास रहने वाले लोगो के बयान सुनते हैं। पर कोई फायदा नहीं हो पाता है। सभी लोग कहते हैं कि दोनों ही पेड़ को पानी देते थे। और दोनों ही पेड़ के आसपास कई बार देखे जाते थे। पेड़ की निगरानी करने वाले चौकीदार के बयान से भी साफ नहीं हुआ की पेड़ का असली मालिक राघव है कि केशव है, क्योंकि राघव और केशव दोनों ही पेड़ की रखवाली करने के लिए चौकीदार को पैसे देते थे। अंत में अकबर थक हार कर अपने चतुर सलाहकार मंत्री बीरबल की सहायता लेते हैं। बीरबल तुरंत ही मामले की जड़ पकड़ लेते है। पर उन्हे सबूत के साथ मामला साबित करना होता है कि कौन सा पक्ष सही है और कौन सा झूठा। इस लिए वह एक नाटक रचते हैं। बीरबल आम के पेड़ की चौकीदारी करने वाले चौकीदार को एक रात अपने पास रोक लेते हैं। उसके बाद बीरबल उसी रात को

अपने दो भरोसेमंद व्यक्तियों को अलग अलग राघव और केशव के घर ''झूठे समाचार'' के साथ भेज देते हैं। और समाचार देने के बाद छुप कर घर में होने वाली बातचीत सुनने का निर्देश देते हैं। केशव के घर पहुंचा व्यक्ति बताता है कि आम के पेड़ के पास कुछ अज्ञात व्यक्ति पके हुए आम चुराने की फिराक में है। आप जा कर देख लीजिये। यह खबर देते वक्त केशव घर पर नहीं होता है, पर केशव के घर आते ही उसकी पत्नी यह खबर केशव को सुनाती है। केशव बोलता है, ''हां हां सुन लिया अब खाना लगा। वैसे भी बादशाह के दरबार में अभी फेसला होना बाकी है पता नही हमे मिलेगा कि नहीं। और खाली पेट चोरों से लड़ने की ताकत कहाँ से आएगी; वैसे भी चोरों के पास तो आजकल हथियार भी होते हैं।'' आदेश अनुसार ''झूठा समाचार'' पहुंचाने वाला व्यक्ति केशव की यह बात सुनकर बीरबल को बता देता है। राघव के घर पहुंचा व्यक्ति बताता है, ''आप के आम के पेड़ के पास कुछ अज्ञात व्यक्ति पके हुए आम चुराने की फिराक में है। आप जा कर देख लीजियेगा।'' यह खबर देते वक्त राघव भी अपने घर पर नहीं होता है, पर राघव के घर आते ही उसकी पत्नी यह खबर राघव को सुनाती है।

राघव आव देखता है न ताव, फ़ौरन लाठी उठता है और पेड़ की ओर भागता है। उसकी पत्नी आवाज लगाती है, अरे खाना तो खा लो फिर जाना राघव जवाब देता है कि खाना भागा नहीं जाएगा पर हमारे आम के पेड़ से आम चोरी हो गए तो वह वापस नहीं आएंगे इतना बोल कर राघव दौड़ता हुआ पेड़ के पास चला जाता है। आदेश अनुसार ''झूठा समाचार'' पहुंचाने वाला व्यक्ति बीरबल को सारी बात बता देते हैं। दूसरे दिन अकबर के दरबार में राघव और केशव को बुलाया जाता है। और बीरबल रात को किए हुए परीक्षण का वृतांत बादशाह अकबर को सुना देते हैं जिसमे भेजे गए दोनों व्यक्ति गवाही देते हैं। अकबर राघव को आम के पेड़ का मालिक घोषित करते हैं। और केशव को पेड़ पर झूठा दावा करने के लिए कडा दंड देते हैं। तथा मामले को बुद्धि पूर्वक, चतुराई से सुलझाने के लिए बीरबल की प्रशंशा करते हैं।

सच ही तो है, जो वक्ती परिश्रम कर के अपनी किसी वस्तु या संपत्ति का जतन करता है उसे उसकी परवाह अधिक होती है।

## बोले हुए शब्द कभी लौटकर वापस नहीं आते

एक बार एक किसान ने अपने पडोसी को भला बुरा कह दिया, पर जब बाद में उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक संत के पास गया। उसने संत से अपने शब्द वापस लेने का उपाय पूछा। संत ने किसान से कहा, 'तुम खूब सारे पंख इकठ्ठा कर लो, और उन्हें शहर के बीचो-बीच जाकर रख दो।' किसान ने ऐसा ही किया और फिर संत के पास पहुंच गया। तब संत ने कहा, 'अब जाओ और उन पंखों को इकठ्ठा कर के वापस ले आओ' किसान वापस गया पर तब तक सारे पंख हवा से इधर-उधर उड़ चुके थे, और किसान खाली हाथ संत के पास पहुंचा। तब संत ने उससे कहा कि ठीक ऐसा ही तुम्हारे द्वारा कहे गए शब्दों के साथ होता है, तुम आसानी से इन्हें अपने मुख से निकाल तो सकते हो पर चाह कर भी वापस नहीं ले सकते।

**सीख:** कुछ कड़वा बोलने से पहले ये याद रखें कि भला-बुरा कहने के बाद कुछ भी कर के अपने शब्द वापस नहीं लिए जा सकते। हाँ, आप उस व्यक्ति से जाकर क्षमा ज़रूर मांग सकते हैं, और मांगनी भी चाहिए, पर कुछ ऐसा होता है की कुछ भी कर लीजिये इंसान कहीं ना कहीं हो ही जाता है।

## हल करो हीरो बनो

1. अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला कौन थी?
(क) सुनीता विलियम्स (ख) कल्पना चावला
(ग) अनूशेह अंसारी (घ) राखी शर्मा
2. संसद का ऊपरी सदन कौन सा है?
(क) लोक सभा (ख) राज्य सभा
(ग) विधान सभा (घ) विधान परिषद
3. ट्रेन टू पाकिस्तान पुस्तक किसने लिखी?
(क) विक्रम सेठ (ख) खुशवंत सिंह
(ग) आर.के.नारायण (घ) सलमान रुश्दी
4. भारत का सबसे ऊंचा रेलमार्ग पुल किस नदी पर बनाया गया है?
(क) गंगा (ख) यमुना
(ग) चेनाब (घ) गोदावरी
5. कौन सा जानवर पानी पीने के बाद मर जाता है?
(क) मरमोट (ख) कंगारू चूहा
(ग) कोआला (घ) ब्लू टंग्ड लिजर्ड
6. भारत में हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 15 अगस्त (ख) 26 जनवरी
(ग) 14 सितंबर (घ) 2 अक्टूबर

**(उत्तर इसी अंक में)**

## मार लो मुस्की

भक्त: बाबा पढ़ा लिखा हूं पर नौकरी नहीं मिलती क्या करूं?
बाबा: कहाँ तक पढ़े हो..?
भक्त: बाबा मैने 'बी ए' किया है!
बाबा: एक बार और 'बी ए' कर लो, दो बार करने से ''बाबा'' बन जाओगे फिर तुम्हे नौकरी की जरूरत ही नहीं पड़ेगी!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

टीचर: खुशी का ठिकाना न रहा इस मुहावरे का मतलब क्या है?
पप्पू: खुशी घर वालों से छिपकर रोजाना अपने बॉयफ्रेंड से मिलने जाती थी एक दिन उसके पापा ने बॉयफ्रेंड के साथ देख लिया और खुशी को घर से निकाल दिया अब बेचारी खुशी का ठिकाना ना रहा। टीचर बेहोश?

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

विदेश यात्रा से लौटकर आये संता ने अपनी बीवी से पूछा- क्या मैं विदेशी जैसा दिखता हूं?
बीवी- नहीं तो
संता- तो फिर लन्दन में एक औरत क्यों पूछ रही थी कि मैं विदेशी हूं।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

चुलबुल ने पूछा - कैसे हैं बाबाजी...?
बाबाजी बोले- हम तो साधू हैं बेटा...हमारे 'राम' हमें जैसे रखते हैं, वैसे ही रहते हैं...! तुम तो सुखी हो ना बच्चा...?
चुलबुल बोला- हम तो संसारी लोग हैं बाबाजी... हमारी 'सीता' हमें जैसे रखती है, हम वैसे ही रहते हैं...!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी : बाजार से, दूध का 1 पैकेट ले आओ। हां, अगर नींबू दिखें, तो 6 ले आना..।
पति, 6 पैकट दूध ले आया..
पत्नी : 6 पैकेट दूध.. ?
पति : हां 6 पैकेट लाया हूं, क्योंकि बाजार में नींबू दिख गए थे, अब बताओ पति कहां गलत है?
पत्नी: सुनो जी ये फोन काम नहीं कर रहा है, दूसरा ले लूं?
पति: काम तो तुम भी नहीं करती हमने कभी कुछ कहा!?

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पति और पत्नी में हमेशा पत्नी बड़ी होती है,क्योंकि पति में छोटी इ की और पत्नी में बड़ी ई की मात्रा होती है।
.. इतना ज्ञान आपको कोई नहीं देगा!!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

दो बुज़ुर्ग अदालत में तलाक के लिए गए।
जज ने पूछा- इस उम्र में तलाक क्यों लेना चाहती हैं आप?
महिला बोली- जज साहब! मेरे पति मुझ पर मानसिक अत्याचार कर रहे हैं।
जज ने पूछा- वो कैसे?
महिला ने कहा- इनकी जब मर्ज़ी होती है मुझे खरी-खोटी सुना देते हैं और जब मैं बोलना शुरू करती हूं अपने कान की मशीन निकाल देते हैं।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बंता अपनी बीवी के साथ कॉफी हाउस गया।
बंता(बीवी से)- कॉफी जल्दी पी, नहीं तो ठंडी हो जाएगी!
बीवी- तो क्या हुआ जी?
बंता- मेन्यू कार्ड नहीं देखा तूने!
हॉट कॉफी- 15 रुपए
कोल्ड कांफी- 45 रुपए

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी- मैं रोज पूजा करती हूं काश एक दिन ''श्रीकृष्ण'' के दर्शन हो जाये..
पति- एक बार मीराबाई बन कर जहर पीले फिर देख श्रीकृष्ण तो क्या तुझे सारे भगवान नजर आ जाएंगे

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बाप बेटे ने मिलकर बड़ी मुश्किल से सास बहु का झगड़ा शांत करवाया,
तभी बच्चे ने नानी को आते देखा और चिलाया
तीसरी लहर आ गई-तीसरी लहर आ गई

## माथापच्ची-15

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | | | | | | | 5 | 1 |
| | 1 | 4 | | 3 | | 6 | | 7 |
| 8 | | 7 | | | | | | |
| | | | 7 | | | 5 | 4 | |
| | | 6 | 1 | | 2 | 3 | | |
| | 9 | 2 | | | 5 | | | |
| | | | | | | 4 | | 9 |
| 3 | | 1 | | 6 | | 8 | 7 | |
| 6 | 4 | | | | | | | 3 |

**नियम :** प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3 3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

## माथापच्ची 14 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 7 | 1 | 2 | 6 | 9 | 8 | 5 | 3 |
| 6 | 5 | 2 | 8 | 7 | 3 | 9 | 4 | 1 |
| 9 | 8 | 3 | 5 | 1 | 4 | 2 | 6 | 7 |
| 3 | 1 | 8 | 9 | 4 | 5 | 6 | 7 | 2 |
| 5 | 6 | 4 | 7 | 2 | 1 | 3 | 9 | 8 |
| 2 | 9 | 7 | 6 | 3 | 8 | 5 | 1 | 4 |
| 1 | 2 | 9 | 4 | 8 | 6 | 7 | 3 | 5 |
| 8 | 3 | 5 | 1 | 9 | 7 | 4 | 2 | 6 |
| 7 | 4 | 6 | 3 | 5 | 2 | 1 | 8 | 9 |

# आसनसोल दक्षिण की विधायक अग्निमित्रा पाल का रानीगंज बीडीओ कार्यालय में धरना

## पानी संकट को लेकर हंगामा

**आसनसोल।** दक्षिणी विधानसभा की विधायक अग्निमित्रा पाल ने रानीगंज बीडीओ कार्यालय के सामने जोरदार धरना प्रदर्शन किया और कार्यालय के सामने वाली सड़क को बंद कर विरोध जताया। उनका आरोप है कि उनकी विधानसभा के कई ग्रामीण इलाकों में गंभीर पानी संकट बना हुआ है।विधायक अग्निमित्रा पाल ने कहा कि कई पंचायत क्षेत्रों में पानी की भारी कमी है और लोग हाहाकार की स्थिति में हैं। कई दिनों से स्थानीय निवासी पानी की समस्या को लेकर उनके पास शिकायत दर्ज करा रहे थे। उनके अनुसार स्थानीय जनप्रतिनिधि भी इस समस्या के समाधान में सहयोग नहीं कर रहे हैं। इन्हीं मुद्दों को लेकर आज इञ्ड कार्यालय में उन्होंने धरना दिया। उनका कहना है कि पानी लोगों तक कब पहुँचेगा, इस पर अब तक बीडीओ अधिकारी कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे पाए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल सरकार जनता को बुनियादी सेवाएं देने में असफल हो चुकी है। उन्होंने कहा कि 2026 के चुनाव के बाद भाजपा की सरकार आएगी और नागरिकों को पानी सहित अन्य सुविधाएं सुचारू रूप से मिलेगी।

### तृणमूल का पलटवार

इस विरोध प्रदर्शन पर रानीगंज के तृणमूल नेता विनोद नोनिया ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि एक विधायक के साथ कम से कम 500 लोग होने चाहिए, लेकिन अग्निमित्रा पाल केवल 10 लोगों को लेकर आंदोलन कर रही हैं। उन्होंने कहा कि अगर तृणमूल कहीं खड़ी हो जाए तो वहाँ हजारों लोग जुट जाते हैं। विनोद नोनिया ने आरोपों को गलत बताते हुए कहा कि ममता सरकार सही ढंग से काम कर रही है और आने वाले चुनाव में अग्निमित्रा पाल की जमानत जब्त हो जाएगी।

# मेयर विधान उपाध्याय ने सूर्यमगर पंप हाउस में किया शिलान्यास

## अमृत परियोजना के तीसरे चरण का शुभारंभ

**आसनसोल।** नगर निगम के मेयर विधान उपाध्याय ने बर्नपुर के सूर्यमगर पंप हाउस पहुंचे, जहाँ उन्होंने अमृत परियोजना के तीसरे चरण के तहत एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट का शिलान्यास किया। इस परियोजना का उद्देश्य सूर्यमगर पंप हाउस से 6.28 किलोमीटर दूर स्थित इलाकों के विभिन्न गांवों तक पेयजल की आपूर्ति सुचारू रूप से पहुंचाना है। इसी के लिए नई जल लाइन की आधारशिला रखी गई।मेयर द्वारा शिलान्यास किए गए इस प्रोजेक्ट के पूरा हो जाने पर इस क्षेत्र के कई गांवों को स्थायी समाधान मिल जाएगा। इनमें शामिल हैं। कोईलापुर, सूर्यमगर, पुरुषोत्तमपुर, सालडांगा, दामोदर लाइन पाड़ा और दामोदर सिउड़ी पाड़ा। इन सभी इलाकों के लोगों को लंबे समय से पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा था, और परियोजना पूर्ण होने के बाद उन्हें नियमित जल आपूर्ति सुनिश्चित होगी। परियोजना के शिलान्यास के साथ स्थानीय निवासियों में उम्मीद की नई किरण जगी है कि जल्द ही उनके क्षेत्रों में जल संकट का समाधान होगा।

# पश्चिम बंगाल सरकार ने शुरू की मोबाइल स्वास्थ्य सेवा, मेयर विधान ने किया उद्घाटन

**आसनसोल।** स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से एक ब्राम्यमान (मोबाइल) स्वास्थ्य सेवा वाहन का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में पश्चिम बर्धमान जिले के मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी मो. शेख यूनुस सहित कई पार्षद मौजूद थे। मेयर विधान उपाध्याय ने फीता काटकर इस सेवा का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी लगातार लोगों तक सेवाएं पहुँचाने के लिए प्रयासरत हैं। मेयर ने बताया कि आर्थिक रूप से सक्षम लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होते हैं और समय पर चिकित्सीय जांच करा लेते हैं, लेकिन जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं, वे ऐसा नहीं कर पाते। इन्हीं को ध्यान में रखते हुए इस ब्राम्यमान चिकित्सालय की शुरूआत की गई है। उन्होंने बताया कि पूरे पश्चिम बर्धमान जिले में इस तरह के पाँच ब्राम्यमान चिकित्सा वाहन शुरू किए गए हैं, जहाँ 39 प्रकार की दवाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी।

# बंगाल चुनाव 2026 से पहले बड़ा प्रशासनिक फेरबदल

## पुलिस महकमे में 57 अधिकारियों का तबादला

**आसनसोल।** पश्चिम बंगाल में 2026 विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही प्रशासनिक गतिविधियाँ तेज हो गई हैं। इसी क्रम में राज्य सरकार ने पुलिस विभाग में एक व्यापक फेरबदल किया है। गृह विभाग द्वारा जारी आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार एसीपी एसडीपीओ और डीएसपी रैंक के कुल 57 अधिकारियों का तबादला कर दिया गया है।

### आसनसोल-दुर्गापुर कमिश्नरेट में भी बड़ा बदलाव

तबादलों की सूची में आसनसोल दुर्गापुर पुलिस कमिश्नरेट के लगभग आधा दर्जन एसीपी भी शामिल हैं। माना जा रहा है कि संवेदनशील इलाकों में कानून-व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए यह अहम कदम उठाया गया है। राज्य में इन दिनों चुनाव आयोग की स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन प्रक्रिया चल रही है, जिसके तहत मतदाता सूची की व्यापक समीक्षा की जा रही है। हाल के दिनों में बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत जैसी घटनाओं ने प्रशासनिक हलचल बढ़ाई थी। विपक्ष ने भी इस मुद्दे को जोरशोर से उठाया।विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी ने इन तबादलों को चुनावी रणनीति बताया था और मुख्य चुनाव आयुक्त को शिकायत दी थी। इसके बाद ही पुलिस विभाग में यह बड़ा फेरबदल सामने आया।

**सरकारी सूत्रों के अनुसार, इन बदलावों का उद्देश्य है—**

गौरतलब है कि कल 14 एसपी स्तर के आईपीएस अधिकारियों और 26 एएसपी अधिकारियों का तबादला किया गया था। यानी दो दिनों में कुल 83 पुलिस अधिकारियों का स्थानांतरण किया जा चुका है।

**चुनावी तैयारी का संकेत**

विश्लेषकों का मानना है कि इस बड़े पैमाने के तबादले से साफ संकेत मिलता है कि राज्य सरकार और चुनाव आयोग दोनों 2026 के चुनाव को लेकर पूरे सिस्टम को पहले से सक्रिय कर देना चाहते हैं।

## भालाडीह और मनकेश्वर दामोदर घाट से अवैध बालू उठाव पर बवाल

# महिलाओं ने झाड़ू उठाकर किया विरोध परिमल पर धमकी देने का आरोप

**आसनसोल।** कुलटी थाना क्षेत्र के सकतोड़िया फाड़ी अंतर्गत भालाडीह और मनकेश्वर दामोदर नदी घाट से अवैध बालू उठाव को लेकर स्थानीय लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है। आसनसोल नगर निगम के वार्ड संख्या 99 के झुनट ग्राम, भालाडीह शलोनी, बिनोद बांध और पलाशडांगा इलाके के निवासियों ने आरोप लगाया है कि परिमल नामक व्यक्ति लंबे समय से प्रशासन को धोखा देकर अवैध तरीके से बालू की निकासी कर रहा है। महिलाएं झाड़ू लेकर बालू माफियाओं के खिलाफ उतरीं सड़क परस्थानीय महिलाओं ने हाथों में झाड़ू लेकर विरोध जताया। उनका कहना है कि अवैध बालू उठाव के कारणनदी में नहाना और धोबीघाट का काम बाधित हो गया है,धार्मिक अनुष्ठान भी पूरी तरह प्रभावित हो चुके हैं। महिलाओं का आरोप है कि दामोदर नदी का प्राकृतिक प्रवाह बिगड़ गया है और घाट अब इस्तेमाल के लायक नहीं रह गया। गांव वालों ने यह भी आरोप लगाया कि परिमल ने कई लोगों को फोन कर धमकाया है कि यदि वे उसके ट्रकों को रोकने या विरोध करने की कोशिश करेंगे तोउन्हें झूठे मामले में फंसाया जाएगा, गोली मारने की धमकी दी जाएगी,या फिर पूरा गांव खाली करवा दिया जाएगा। परिमल के कथित तौर पर यह भी कहा गया कि उन्हें मालूम नहीं कि उसकी पहुंच कहाँ तक है। कुलटी मंडल 3 के अध्यक्ष अमर प्रसाद समर्थन में आए। मामला बढ़ने के बाद कुलटी मंडल 3 के अध्यक्ष अमर प्रसाद स्थानीय लोगों के समर्थन में उतर आए। उन्होंने कहा परिमल मंडल भले ही बालू माफिया हो, लेकिन वह किसी निर्दोष ग्रामीण को धमका नहीं सकता। वह हर दिन 200 300 ट्रकों में अवैध बालू की तस्करी कर रहा है।हम यह जानना चाहते हैं कि उसके पीछे किसका संरक्षण है और उसे इतनी गतिविधियों की इजाजत किसने दी है। स्थानीय लोगों ने मांग की है कि प्रशासन तुरंत कार्रवाई करे ताकि दामोदर नदी घाट को अवैध कारोबार से मुक्त कराया जा सके।

# सीतारामपुर -विश्वकर्मानगर का 'आदर्श' बना राष्ट्रव्यापी मिसाल

**सीतारामपुर।** लगन, मेहनत और माता-पिता के त्याग की मिसाल पेश करते हुए, सीतारामपुर के विश्वकर्मानगर निवासी आदर्श प्रसाद ने देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक, चार्टर्ड अकाउंटेंट फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण कर अपने क्षेत्र का नाम रोशन किया है। आदर्श की यह उपलब्धि इसलिए भी खास है क्योंकि उनके पिता, श्री दुर्गेश प्रसाद, एक फेरी वाले (हॉकर) के रूप में काम करते हैं। सीमित आय के बावजूद, उन्होंने शिक्षा को प्राथमिकता दी और अपने बच्चों की पढ़ाई कभी रुकने नहीं दी।' आदिकर्ना फाउंडेशन' ने किया सम्मानितः एनजीओ अध्यक्ष चेयरपर्सन बोले, 'कमल की तरह खिला' आदर्श की प्रेरणादायक सफलता का जश्न मनाने के लिए, स्थानीय एनजीओ 'आदिकर्ना फाउंडेशन' ने सम्मान समारोह का आयोजन किया। फाउंडेशन के अध्यक्ष, माननीय संतोष कुमार वर्मा ने आदर्श को सम्मानित करते हुए कहा, विश्वकर्मानगर जैसे साधारण मोहल्ले से कमल की तरह खिलकर आदर्श ने यह साबित कर दिया है कि प्रतिभा किसी पहचान की मोहताज नहीं होती। उनके पिता का त्याग पूरे सीतारामपुर के लिए एक 'आदर्श' बन गया है। समारोह में टैगोर इंस्टीट्यूट सार्वजनिक दुर्गा पूजा पूजा कमेटी के सचिव और जॉइंट सेक्रेटरी विमलनाथ भी उपस्थित रहे। शिक्षा ही है सबसे बड़ा धन गरीबी में पलने के बावजूद, आदर्श के परिवार ने शिक्षा को अपना सबसे बड़ा धन माना है। आदर्श के माता-पिता, श्री दुर्गेश प्रसाद और श्रीमती माया देवी, अपने बेटे की इस उपलब्धि पर गर्वित हैं।

# आसनसोल से साइकिल पर 55 दिन में लद्दाख के गलवान घाटी पहुंचे किशोरियों का दल

### रविन्द्र भवन में हुआ सम्मान

**आसनसोल।** आसनसोल के एक समूह ने अद्भुत मिसाल पेश की है। यहाँ के किशोर-किशोरियों की एक टीम ने साइकिल से मात्र 55 दिनों में लद्दाख के गलवान घाटी तक पहुँचकर इतिहास रच दिया। शुक्रवार को आसनसोल के रविन्द्र भवन में इन सभी साइकिलिस्टों को सम्मानित किया गया।सम्मान समारोह में दुगार्पुर के अंडाल स्थित काजी नजरुल इस्लाम हवाईअड्डे के डायरेक्टर कैलाश मंडल और नेशनल एड-वेंचर फाउंडेशन के डायरेक्टर मिहिर कुमार मंडल उपस्थित थे। इनपुट के अनुसार, 20 सितंबर को आसनसोल से 10 सदस्यीय साइकिलिस्ट टीम गलवान घाटी की ओर रवाना हुई थी। यह टीम 10 राज्यों से होकर गुजरी और 55 दिनों की यात्रा पूरी कर अपने गंतव्य तक पहुँच गई।

# आसनसोल 2026 बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा की रणनीतिक हलचल तेज

**आसनसोल।** पश्चिम बंगाल में 2026 विधानसभा चुनाव की तैयारियाँ अब जोर पकड़ने लगी हैं। राजनीतिक गतिविधियाँ बढ़ने के साथ ही बीजेपी भी अपने संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करने में जुट गई है। इसी कड़ी में आज आसनसोल से एक महत्वपूर्ण राजनीतिक हलचल देखने को मिली। शनिवार को आसनसोल के भाजपा जिला पार्टी कार्यालय में एक अहम रणनीतिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में पुरुलिया, बिष्णुपुर, बांकुड़ा और आसनसोल विधानसभा क्षेत्रों के प्रमुख पदाधिकारी, विधायक, सांसद और वरिष्ठ संगठन प्रतिनिधि मौजूद रहे। बीजेपी नेताओं ने बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने, प्रचार अभियान को नए सिरे से धार देने और पिछले चुनावों में मिली चुनौतियों की समीक्षा पर विस्तार से चर्चा की। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव की विशेष मौजूदगी। इस बैठक में वन, परिवेश एवं जलवायु परिवर्तन के केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव विशेष रूप से शामिल हुए। सूत्रों के अनुसार, उनकी मौजूदगी को पार्टी कार्यकताओं ने 2026 चुनावी रणनीति के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना है। बैठक के दौरान जमीनी हालात, स्थानीय मुद्दों, जिलों के राजनीतिक समीकरण और आगे की कार्ययोजना पर खुलकर चर्चा की गई। आने वाले महीनों में बड़े अभियान की तैयारी पार्टी सूत्रों के मुताबिक,आगामी महीनों में इन जिलों में संगठन विस्तार, जनसंपर्क अभियान, और बूथ सुदृढ़ीकरण कार्यक्रम जोर- शोर से चलाए जाएंगे। इसके साथ ही 2026 के लिए चुनावी माहौल बंगाल में धीरे-धीरे गर्म होने लगा है, और पार्टियों की यह सक्रियता चुनावी सरगर्मी को और तेज कर रही है।

समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने ललकारा, भाजपा के कब्जे में होगी सातों विधानसभा, हजारों के तदाद में भाजपा कार्यकर्ता शामिल , प्रसाद ने दिया खुला चैलेज

# दम है तो रोक के दिखाओ

## मै सनातनी हुं, मेरा पूरा जीवन भाजपा को समर्पित

**आसनसोल।** समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने गंभीर समाचार के एक स्पेशल इंटरव्यू में कहा कि अब मै खुल कर भाजपा का प्रचार-प्रसार करने जा रहा हुं। अब मुझे किसी भी तरह से कोई रूकावट रोक नहीं सकती है। उन्होंने कहा कि इस बार आर-पार की लड़ाई लड़ने के लिए मै राजनीति मैदान में उतरा हुं। प्रसाद ने कहा कि मुझे पता है कि इस बार सत्तारूढ़ पार्टी रोकने के लिए काफी हथकंडे अपनाएगी। इसके बावजूद भी मै रूकने वाला नहीं हुं। प्रसाद ने कहा कि भाजपा की सरकार इस बार बंगाल में आ रहीं है, ये निश्चित है। उन्होंने कहा कि मै अपना आदर्श देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को मानता हुं। हालांकि की पूछे जाने पर क्या यदि तृणमूल कांग्रेस आपको कोई विधानसभा से सीट देती है तो क्या आप तृणमूल का दामन थामेंगे, इसके जबाव में प्रसाद ने कहा कि मेरी सोच तृणमूल के साथ कही नहीं बैठती है। तृणमूल कांग्रेस जनता की शोषण करने वाली पार्टी है। जो मुझे कत्तई पसंद नहीं है। मै शुरु से ही लोगों के सेवा करता आ रहा हुं। उन्होंने कहा कि मेरा एक सपना है कि मै लोगों के लिए इतना काम करू कि लोग अपना ही परिवार के एक सदस्य जैसा मानने पर मजबूर हो जाए। उनके सूख-दूख में हमेशा उनके साथ रहु। साथ ही उन्होंने कहा कि मै एक सनातनी हुं और मेरी सत प्रतिशत सोच भाजपा के साथ मिलती है।

### जिले की सातों विधानसभा होगी भाजपा के कब्जे में

प्रसाद ने कहा कि मै लोगों के घरों तक जाकर मै उनसे अनुरोध करूगा कि वे लोग भाजपा का दामन थामे और पंश्चिम बंगाल में भाजपा की सरकार को लाए। उन्होंने कहा कि जिले में सात विधानसभा है और सातों विधानसभा में जीत हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि तृणमूल कांग्रेस के जुल्म से लोग परेशान हो चुके है। वे लोग अब भाजपा का दामन थामने के लिए तैयार हो चुके है। बस उनको जगाना बाकि है। उनके साथ पूरा भजाप परिवार साथ खड़ा है।

प्रसाद ने कहा कि किसी में दम नहीं मुझे रोक ले। समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने कहा कि हो सकता है मै सत्तारूढ़ पार्टी का टारगेट बन जाउ। उन्होंने कहा कि मै कोई गलत कारोबार नहीं करता हुं। मेरा व्यवसाय साफ-सुथरा है। वे लोग मेरे व्यवसाय को टारगेट करेंगे, इसके लिए मै तैयार हुं। किसी में इतना दम नहीं है कि मेरे व्यवसाय को लेकर मुझे रोक दे।

### कृष्णा प्रसाद के किए कार्यो का उल्लेख

**आसनसोल।** विशिष्ट समाजसेवी कृष्णा प्रसाद द्वारा पिछले कुछ वर्षों से जिले के 9 विधानसभा में समाजिक कार्यो को लेकर काफी सराहाना की जा रही है। लोग उनके कार्यो को लेकर चौक चौराहों पर चर्चा करते नहीं थकते है। गंभीर समाचार के संवाददाता की जानकारी के अनुसार समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने कई ऐसे कार्य किए है जो आसनसोल के ही नहीं बल्कि पूरे राज्य में इतिहास रच दिया। वही बड़े धार्मिक पूजा यज्ञ हो या फिर छठ पूजा हो। वहीं विगत कुछ दिनों पहले महाकुभ मेले को लेकर लोग काफी उत्साहित थे। हालांकि आर्थिक स्थिति सहीं नहीं होने के कारण कई लोग कुंभ मेले में जाने में असमर्थ थे। लेकिन उनके सपनों को पूरा करने के लिए समाजसेवी कृष्णा प्रसाद ने अपना हाथ बढ़ाया और लगभग 10 एसी बसों से उनके सपनों तक पहुंचाने में काफी सराहनीय कार्य किया है। राजनीतिक सूत्रों के हवाले से यह खबर उठ कर आ रहीं है कि वे इस बार भाजपा के प्रत्याशी विधानसभा चुनाव में होंगे। साथ ही यह भी कहकसा उठाया जा रहा है कि वो चाहे जिस विधानसभा से चुनाव किसी भी राजनीतिक पार्टी से लड़ेंगे उनकी भारी मतों से विजय तय है। लोगों का विश्वास यह है कि जब वो कुछ भी नहीं थे तो इतना सारा समाजिक कार्य कर रहे है। कई करोड़ रूपए की लागत से लोगों का सपना पूरा कर रहे है। लोगों ने कहा कि यदि समाजसेवी कृष्णा प्रसाद कहे तो उनके बुलावे पर हजारों की तदाद तो छोड़िये लाखों की संख्या में लोग उनके पास खड़े दिखेंगे।

## इस बार 180 पार का नारा दिया भाजपा नेताओं ने

**आसनसोल।** गिरजा मोड़ पर भाजपा ने एक शबा का आयोजन किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि में केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भुपेंद्र यादव मौजूद थे। इसके सा विधायिका अग्निमित्रा पाल, विधायक डॉ अजय पोद्दार, भाजपा नेता कृष्णेंदू मुखर्जी, भाजपा नेता कृष्णा प्रसाद आदि मौजूद रहें। केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भुपेंद्र यादव ने तृणमूल कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि तृणमूल सरकार में भ्रष्ट नेताओं का ताता लगा हुआ है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के पास ना तो कोई कारखाना है नाही कोई व्यवसाय करने की सुविधा। लोगों को मात्र भ्रमित करना ही कार्य बचा है। लेकिन बंगाल की जनता भी अब जाग चुकी है। लोगों के बीच भाषावादी भेदभाव करना ही राज्य सरकार की मंशा बन चुकी है। लोग तृणमूल सरकार से त्रस्त हो चुके है। कोयला और बालू की अवैध धंधों पर जमकर बरसे केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भुपेंद्र यादव।

# 18 दिनों में एसआईआर प्रक्रिया पूरी करने पर बेनी माधव सूत्रधर विशेष रूप से सम्मानित

**जामुड़िया।** राज्यभर में वैध मतदाता सूची तैयार करने और अवैध मतदाताओं की पहचान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 4 नवंबर से एसआईआर यानी स्पेशल इंटेंसिव रिविजन (विशेष गहन संशोधन) प्रक्रिया की शुरूआत की गई थी। इस प्रक्रिया के तहत प्रत्येक मतदाता तक घर-घर पहुँचकर एन्यूमरेशन फॉर्म देना, उन्हें भरने में सहायता करना, फॉर्मों का संग्रह करना तथा अंत में सभी फॉर्मों को निर्धारित समय सीमा के भीतर चुनाव आयोग के पोर्टल पर अपलोड करना शामिल था।इसी क्रम में जामुड़िया ब्लॉक में 190 नंबर बूथ के बीएलओ बेनी माधव सूत्रधर ने अपनी सक्रियता, तत्परता और समर्पण के बल पर मात्र 18 दिनों के भीतर पूरे 523 मतदाताओं का कार्य शत-प्रतिशत पूरा किया। उनके इस उत्कृष्ट कार्य के लिए जामुड़िया ब्लॉक के बीडीओ भास्कर विस्वास द्वारा उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि एसआईआर प्रक्रिया शुरू होते ही राज्य के विभिन्न इलाकों से कई तरह के विवाद और चुनौतियों की खबरें सामने आईं। कहीं बीएलओ को घेरकर विरोध प्रदर्शन किया गया, कहीं बढ़ते अतिरिक्त कार्यभार के कारण कई बीएलओ भावुक होकर रो पड़े। कुछ स्थानों पर बस स्टैंड एवं सड़क किनारे बैठकर फॉर्म वितरण करने के मामले भी विवादों में रहे। इन घटनाओं ने 4 नवंबर से अब तक प्रक्रिया को लगातार सुर्खियों में बनाए रखा। ऐसे वातावरण में श्यामला क्षेत्र के बूथ संख्या 190 में बेनी माधव सूत्रधर का 100 प्रतिशत कार्य पूरा करना प्रशासन के लिए प्रेरणा का विषय बन गया। सम्मान प्राप्त करने के पश्चात बीएलओ माधव सूत्रधर ने कहा यदि इस कार्य को सहज भावना से किया जाए तो यह बिल्कुल सरल हो जाता है, लेकिन अगर इसे बोझ समझकर किया जाए तो यह अत्यंत कठिन प्रतीत होता है। 4 नवंबर से चुनाव आयोग के निर्देश के अनुसार मैंने अपने बूथ क्षेत्र के प्रत्येक मतदाता के घर जाकर एन्यूमरेशन फॉर्म दिए, उन्हें भरने में सहायता की और फिर सभी फॉर्म एकत्र कर रात-रात भर जागकर पोर्टल पर अपलोड किए। लगभग 18 दिनों में पूरा कार्य संपन्न हुआ। सम्मान पाकर मैं अत्यंत गर्व महसूस कर रहा हूँ।

# तंबाकू को लेकर जिला प्रशासन ने चलाया जागरूकता अभियान

**जामुड़िया।** जामुड़िया के न्यू केंदा क्षेत्र में तंबाकू को लेकर जिला प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे वर्षभर के जागरूकता अभियान को और मजबूती देते हुए विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान स्थानीय प्रशासनिक टीम ने बाजार क्षेत्रों में जाकर दुकानदारों को तंबाकू बिक्री से जुड़े नियमों की सख्त हिदायत दी।अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि 18 वर्ष से कम उम्र के किसी भी बच्चे को तंबाकू उत्पाद बेचना पूर्णतः प्रतिबंधित है।साथ ही स्कूलों के 100 मीटर के दायरे में किसी भी तरह के तंबाकू उत्पादों की बिक्री नहीं की जाएगी।इस नियम के उल्लंघन पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई।अभियान के दौरान लोगों को इनडायरेक्ट स्मोकिंग के खतरों के बारे में भी जागरूक किया गया।विशेषज्ञों के अनुसार, किसी और की सिगरेट या बीड़ी का धुआं भीतर लेना भी उतना ही हानिकारक है जितना खुद धूम्रपान करना। पास में मौजूद बच्चे, टीनएजर, बुजुर्ग और गैर-स्मोकर सभी इस धुएं से प्रभावित होते हैं और कई गंभीर बीमारियों का शिकार बन सकते हैं।प्रशासन ने लोगों से अपील किया कि वे तंबाकू-मुक्त समाज बनाने में सहयोग करें और युवा पीढ़ी को इस लत से दूर रखने में अपना योगदान दें।

## नियामतपुर में मंत्री प्रदीप मजूमदार की संगठनात्मक बैठक

**कुलटी।** नियामतपुर में राज्य के मंत्री प्रदीप मजूमदार ने एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) को केंद्र में रखते हुए पार्टी नेतृत्व और कार्यकताओं के साथ एक महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक की।बैठक के दौरान मंत्री ने एसआईआर प्रक्रिया को लेकरसंगठन की तैयारियों, कार्यकताओं की ज़िम्मेदारियों, और जमीनी स्तर पर किए जाने वाले कार्यों पर विस्तार से चर्चा की।मंत्री प्रदीप मजूमदार ने यह भी स्पष्ट किया कि एसआईआर प्रक्रिया के दौरान संगठन को बूथ स्तर पर अधिक सक्रिय और सतर्क रहने की आवश्यकता है, ताकि निर्धारित कार्य समय पर और सही तरीके से पूरे किए जा सकें। बैठक में उपस्थित नेताओं और कार्यकताओं ने रक्फ़ के विभिन्न चरणों तथा आगामी योजनाओं को लेकर अपने सुझाव भी साझा किए।

## सालानपुर इलाके में लकड़ बघ्घे का आतंक, कई लोगों को किया घायल

### घर में घुसे लकड़ बघ्घे को सुरक्षित किया गया रेस्कयू

**सालानपुर।** सालानपुर थाना के समीप स्थित निमाई प्रमाणिक के घर में घुसे लकड़बग्घे को 18 घंटे बाद शनिवार दोपहर रेस्कयू किया। घर से रेस्कयू कर वन विभाग ने बड़े लकड़बग्घे को सफलतापूर्वक पिंजरे में कैद कर लिया। रेस्क्यू में वन विभाग के सहियोग पुलिस एवं स्थानीय लोगों ने किया।स्थानीय लोगो के अनुसार बीते शुक्रवार रात करीब 9 बजे सालानपुर थाना के समीप सालानपुर गांव निवासी निमाई प्रमाणिक के घर के आंगन में अचानक दो बड़े लकड़बग्घे दिखाई दिए। भगाने की कोसिस के दौरान एक लकड़बग्घा तो भागने में सफल रहा, लेकिन दूसरा लकड़बग्घा घर के बगल में स्थित एक छोटे से कमरे स्टोर रूम में जा घुसा। जिसके बाद डरे हुए घरवालों ने जल्दी से कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। जिससे लकड़बग्घा कमरे के अंदर ही फंसा रहा। वही कमरा बन्द होने से लकड़बग्घा पूरी रात उस कमरे में बिस्तर के नीचे छिपा रहा। किसी भी अनहोनी से बचने के लिए, कमरे की खिड़कियाँ और दरवाजे पूरी तरह बंद कर घर के निवासी सुरक्षित स्थान पर चले गए। शनिवार सुबह जैसे ही खबर इलाके में फैली, निमाई प्रमाणिक के घर के बाहर गांववालों की एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। सूचना पाकर रूपनारायणपुर रेंज कार्यालय से वन अधिकारी पिंजरे के साथ मौके पर पहुँचे। काफी देर इंतजार करने के बाद भी जब लकड़बग्घा कमरे से बाहर नहीं आया, तो वनकर्मियों ने खिड़की से छोटे पटाखे फोड़े। पटाखों की आवाज से डरकर, लकड़बग्घा तेजी से बिस्तर के नीचे से निकला और दरवाजे से भागने की कोशिश की, और इसी कोशिश में वह लगाए गए पिंजरे में फंश गया।आसनसोल टेरिटोरियल रेंज ऑफिसर बिस्वजीत सिकदर ने रेस्क्यू के बिषय में कहा कि यह ऑपरेशन वन विभाग, गांव वालों, पुलिस और कई जागरूक सामाजिक कार्यकताओं के सहयोग से ही सफल हो पाया है। उन्होंने पुष्टि की कि पकड़े गए लकड़बग्घे को जल्द ही बर्दवान चिड़ियाघर भेजा जाएगा। वही स्थानीय लोगों ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि दो में से एक लकड़बग्घा भाग गया है, और उसे भी ढूंढकर सुरक्षित पकड़ना जरूरी है। इस पर, रेंज अधिकारी ने स्थानीय को स्पष्ट किया कि इलाके में कई कोयले की खदानें होने के कारण लकड़बग्घे प्राकृतिक रूप से यहाँ रहते हैं।उन्होंने गाँव वालों को आश्वासन दिया कि लकड़बग्घे आमतौर पर इंसानों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे किसी भी वन्यजीव को परेशान न करें।

# टीएमसी विधायक हुमायूं कबीर ने भरी हुंकार

## 'हम बाबरी मस्जिद बनाकर रहेंगे'

**निज संवाददाता :** बंगाल में बाबरी मस्जिद की नींव रखने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। टीएमसी विधायक हुमायूं कबीर मस्जिद की नींव रखने पर अड़े हैं, जबकि भाजपा इसका विरोध कर रही है और मस्जिद का नाम बाबरी रखने को तुष्टिकरण की राजनीति करार दे रही है। भाजपा ने कहा है कि 6 दिसंबर को ही बाबरी मस्जिद की नींव रखना सुप्रीम कोर्ट और भारत के संविधान को चुनौती है। मालूम हो कि टीएमसी विधायक हुमायूं कबीर ने 6 दिसंबर को मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद की नींव रखने का एलान किया है। इस पर विवाद को लेकर उन्होंने कहा कि 464 साल पहले, बाबर के सैन्य कमांडर ने मस्जिद का निर्माण कराया। उन्होंने मस्जिद को तबाह करके वहां राम मंदिर का निर्माण कराया और किसी ने भी इसका विरोध नहीं किया। अब जब मैं बाबर के नाम पर मस्जिद बनवाना चाहता हूं तो इसका विरोध क्यों हो रहा है? टीएमसी विधायक ने कहा कि अगर देश का गृह मंत्रालय ऐसा कोई निर्देश जारी करता है कि किसी भी मस्जिद का नामकरण बाबर के नाम पर नहीं होगा तो मैं उनकी बात मानूंगा और मस्जिद का दूसरा नाम रखने पर विचार करूंगा। ....अगर वे मेरा सिर कलम करना चाहते हैं तो वे मस्जिद के शिलान्यास के समय आ सकते हैं, मैं इसके लिए तैयार हूं। मैं चुनौती देता हूं कि मुर्शिदाबाद आएं और मेरा सिर कलम करें, मैं खुद को बलिदान करने के लिए तैयार हूं। हम मस्जिद बनाकर रहेंगे। टीएमसी विधायक हुमायूं कबीर के बयान पर भाजपा विधायक शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि इनकी मंशा बंगाल में अस्थिरता फैलाकर बंटवारे की राजनीति करने की है। हमें किसी भी धार्मिक स्थल के निर्माण से आपत्ति नहीं है, लेकिन बाबर के नाम पर भड़काकर और इसे खास तारीख (6 दिसंबर) से जोड़ना सुप्रीम कोर्ट और देश के संविधान को चुनौती है।

# कोलकाता में तेजी से बढ़ रही है आवारा कुत्तों की संख्या

## हालात पर नियंत्रण के लिए शुरू किया जा रहा है नसबंदी प्रोग्राम

**निज संवाददाता :** कोलकाता शहर में आवारा कुत्तों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है, इसलिए दिसंबर से बड़े पैमाने पर वैक्सीनेशन और नसबंदी प्रोग्राम शुरू किया जा रहा है। डिप्टी मेयर और स्वास्थ्य विभाग के मेयर परिषद अतिन घोष ने कोलकाता नगर निगम की मासिक बैठक में यह जानकारी दी। आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ने से अलग-अलग इलाकों में हो रही परेशानी की शिकायतें नगर निगम को दी जा रही थीं। उस संदर्भ में, नगर निगम ने इस पर विचार करने के बाद नई पहल पर अपनी मुहर लगा दी है। बैठक में वार्ड नंबर 121 के पार्षद रूपक गंगोपाध्याय ने आवारा कुत्तों की समस्या के बारे में सवाल उठाया। जवाब में, अतिन घोष ने कहा कि दिसंबर में शहर के सभी 144 वार्डों में स्पेशल वैक्सीनेशन और नसबंदी कैंप लगाए जाएंगे। उन्होंने कहा- आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ गई है और इस वजह से कई शिकायतें मिली हैं। इसलिए, म्युनिसिपैलिटी ने एक बड़ा प्रोग्राम शुरू किया है।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में आवारा कुत्तों की समस्या को देखते हुए कुछ निर्देश दिए थे। उस पर डिप्टी मेयर ने भी कमेंट किया। उन्होंने कहा-कोलकाता के अलग-अलग इलाकों में आवारा कुत्तों को खाना खिलाने को लेकर झगड़े, हंगामा और पुलिस स्टेशन में शिकायतें भी हुई हैं। हालांकि, दिल्ली की घटना से पहले, कोलकाता म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन ने पूरे शहर में खाना देने के लिए खास जगहों की पहचान की थी। नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग ने पहले ही 487 खास जगहों की पहचान कर ली है, जहां लोग आवारा कुत्तों को खाना दे सकते हैं। उन सभी जगहों पर सही साइनेज लगाने का काम भी चल रहा है। अतिन घोष ने कहा-जिन इलाकों में शिकायतें ज़्यादा मिलती हैं, वहां साफ नोटिस भी दिए जाएंगे ताकि कोई भी अनियमित रूप से खाना न दे। इससे झगड़े और गलतफहमियां कम होंगी। उन्होंने यह भी कहा कि नगर निगम के 19 एंटी-रेबीज वैक्सीनेशन सेंटर पूरे शहर में रेगुलर सर्विस दे रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि पिछले पांच सालों में कोलकाता में रेबीज से कोई मौत नहीं हुई है, जो नगर निगम की हेल्थ पहल का नतीजा है। नगर निगम के सूत्रों के मुताबिक, अगर आवारा कुत्तों की नसबंदी और वैक्सीनेशन का यह नया प्लान लागू हो जाता है तो शहर में कुत्तों की संख्या कंट्रोल में आ जाएगी और इंसान-जानवर का साथ रहना आसान हो जाएगा। साथ ही, प्रशासन को उम्मीद है कि खाना खिलाने के लिए खास जगहों की पहचान होने से लोगों के बीच झगड़े भी कम होंगे। नगर निगम के अधिकारियों का मानना है कि शहर में आवारा कुत्तों की समस्या को दूर करने के लिए दिसंबर में की गई यह पहल भविष्य में लंबे समय के समाधान का रास्ता बनाएगी।

# एसआईआर ने 37 साल से बिछड़े बेटे को परिवार से मिलाया

**निज संवाददाता :** बंगाल में एक तरफ जहां एसआईआर को लेकर घमासान मचा है वहीं, दूसरी तरफ यहां से एक अनोखी घटना सामने आई है, जिसे सुनकर लोग हैरान भी हैं और परेशान भी। दरअसल, मामला ही कुछ ऐसा है। लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि इसे चमत्कार कहा जाए या फिर स्पेशल इंसेंटिव रिवीजन यानी एसआईआर का कमाल। बंगाल के पुरुलिया के छोटे से गांव में पिछले 37 साल से बिछड़ा एक बेटा एसआईआर के चलते अपने घर को लौट आया और अपने परिवार से मिल पाया। दरअसल, मामला कुछ यूं है कि पुरुलिया के चक्रवर्ती परिवार ने अपने बड़े बेटे विवेक चक्रवर्ती की उम्मीद बरसों पहले छोड़ दी थी। उन्हें बिल्कुल भी यह यकीन नहीं था कि 37 साल बाद आज जो उनके साथ हुआ है वह चमत्कार है या फिर एसआईआर का कमाल? चक्रवर्ती परिवार का बड़ा बेटा विवेक चक्रवर्ती 1988 में घर छोड़कर लापता हो गया था। वर्षों की खोजबीन के बाद भी कोई अता-पता नहीं चला। बाद में परिवार ने भी विवेक को खोजना बंद कर दिया। मगर एक फोन कॉल ने सब कुछ बदल दिया। हुआ यह कि विवेक (जो 37 साल से लापता था) का छोटा भाई प्रदीप चक्रवर्ती अपने इलाके का बूथ लेवल ऑफिसर यानी बीएलओ है। एसआईआर के फॉर्म पर उसका नाम और फोन नंबर छपा था। एसआईआर का फॉर्म इलाके में हर जगह बांटा गया था। विवेक का बेटा कोलकाता में रहता है। उसने डॉक्यूमेंटेशन में मदद के लिए बीएलओ को फोन किया। वह अभी तक बीएलओ यानी प्रदीप चक्रवर्ती से किसी भी तरह के संबंध से अनजान था। उसे यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि वो जिस बीएलओ से बात कर रहा है वह उसका चाचा है। दस्तावेजों की बातचीत धीरे-धीरे एक मोड़ पर पहुंच गई। इसके बाद धीरे-धीरे रिश्तों के धागे खुलते गए। बातचीत जब पारिवारिक इतिहास तक पहुंची तो सबकुछ साफ हो गया। बातचीत के दौरान प्रदीप ने अपने बड़े भाई विवेक के बारे में बताया जो 1988 में घर से लापता हो गया था। बातचीत आगे बढ़ी तो और चीचें साफ हुई। प्रदीप को अपने भतीजे की बातचीत और भी बहुत कुछ साफ होने लगा जो केवल वही जानते थे। तब प्रदीप को लगा कि वो अपने भतीजे से बात कर रहा है। इस तरह विवेक का पता चला।

## अजब-गजब

# महिला के पेट में एक पूरा कुनबा!

## अल्ट्रासाउंड जांच में मिले एक साथ 9 भ्रूण

**निज संवाददाता :** काहिरा में एक महिला के पेट में डॉक्टरों को बच्चे नहीं बल्कि पूरा कुनबा ही पलता हुआ मिला। यह जानकारी रिपोर्ट में दी गई कि महिला गई तो रेगुलर चेकअप के लिए थी, लेकिन डॉक्टरों के लिए ये चेकअप किसी सदमे से कम नहीं था। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि जो उन्हें रिपोर्ट में दिखा, वो सच है। जब महिला की नियमित अल्ट्रासाउंड जांच की गई, तो डॉक्टरों ने सिर को चकरा देने वाला दृश्य देखा। न नॉर्मल प्रेग्नेंसी, न जुड़वा, न ट्रिपलेट बल्कि महिला की कोख में एक साथ नौ भ्रूण दिखाई दिए। ये कोई सामान्य घटना नहीं है कि इंसानी कोख में इतने बच्चे पलते हुए मिल जाएं। इस खबर ने पूरे मेडिकल समुदाय में चर्चा छेड़ दी है। डॉक्टरों ने महिला का चेकअप किया और जैसे ही अल्ट्रासाउंड में भ्रूणों की संख्या सामने आई, वे दंग रह गए। इतना ही नहीं महिला के माता-पिता को भी यकीन नहीं हुआ। दरअसल यह मामला इतना दुर्लभ है कि कई डॉक्टरों ने इसे अपने करियर की सबसे असामान्य घटना बताया। स्त्रीरोग विशेषज्ञ वाइल अल-बन्नो ने कहा कि यह मेडिकल साइंस में मिलने वाले सबसे दुर्लभ मामलों में से एक है। उन्होंने बताया कि आधुनिक चिकित्सा तकनीकों की मदद से भ्रूणों की संख्या कम की जा सकती है, ताकि मां की सेहत को कम खतरा हो और बाकी भ्रूणों का विकास बेहतर हो सके। विशेषज्ञों का कहना है कि यह स्थिति ओवरी को अत्यधिक उत्तेजित करने वाली दवाइयों के अनियंत्रित इस्तेमाल के कारण हो सकती है। ऐसी गर्भावस्था मां और बच्चों दोनों के लिए बेहद जोखिम भरी मानी जाती है। कभी-कभी महिला के शरीर में हाइपरओव्यूलेशन होता है यानि एक ही मासिक चक्र में कई अंडे रिलीज़ हो जाते हैं। ऐसा अक्सर किसी ट्रीटमेंट या दवाइयों के प्रभाव से होता है। इन दवाओं की वजह से 1020 अंडे तक रिलीज हो सकते हैं, जिससे मल्टीपल एम्ब्रयो बन जाते हैं। इसके इलाज के तौर पर सेलेक्टिव फीटस रिडक्शन यानि कुछ भ्रूणों को हटाया जाता है, ताकि सुरक्षित डिलीवरी हो सके।

# 5 मिनट की झप्पी देकर युवा लड़के देते हैं महिलाओं को इमोशनल सपोर्ट

## चीन में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है अनोखा ट्रेंड

**निज संवाददाता :** पडोसी देश चीन में जिम जाने वाले युवा लड़के महिलाओं को 5 मिनट की झप्पी (हग) देकर इमोशनल सपोर्ट देते हैं। चीन में यह नया और अनोखा ट्रेंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है, जिसे 'मैन मम' कहा जा रहा है। यह कोई रोमांटिक डेट नहीं होती, बल्कि महिलाओं के मानसिक तनाव और काम या पढ़ाई के प्रेशर को कम करने के लिए यह सेवा दी जाती है। इस काम के बदले युवाओं को 20 से 50 युआन, यानी करीब 250 से 600 रुपये मिलते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस ट्रेंड की शुरुआत एक कॉलेज छात्रा की सोशल मीडिया पोस्ट से हुई थी। उसने लिखा कि थिसिस का स्ट्रेस इतना बढ़ गया है कि बस किसी से गले लगना चाहती हूं। इस पोस्ट को लाखों लोगों ने पढ़ा और कमेंट किया, जिससे 'हग थैरेपी' तेजी से वायरल हो गई। पहले यह फ्री में दोस्तों के बीच होती थी, लेकिन अब प्रोफेशनल सेवाओं के रूप में विकसित हो गई है। लड़कियां चैट ऐप्स के माध्यम से इन लड़कों से संपर्क करती हैं और पार्क, मेट्रो स्टेशन या शॉपिंग मॉल जैसी सार्वजनिक जगहों पर मिलती हैं। इस ट्रेंड में शामिल लड़के केवल मजबूत शरीर वाले नहीं होते, बल्कि धैर्यवान और मां जैसे भाव रखने वाले होते हैं। महिलाओं को इन्हें चुनते समय लुक, बिहेवियर, बातचीत करने का अंदाज और एटीट्यूड देखा जाता है। रिपोर्ट्स के अनुसार, झोउ नाम के एक मैन मम ने 34 हग्स देकर 1758 युआन कमाए। अधिकांश लड़के इसे फुल-टाइम जॉब नहीं मानते, बल्कि साइड बिजनेस के तौर पर करते हैं। 'मैन मम' ट्रेंड का मुख्य मकसद पैसा कमाना नहीं, बल्कि महिलाओं को मानसिक राहत देना है। महिलाएं इसमें अपने वर्क स्ट्रेस, बॉडी इमेज प्रेशर और पारिवारिक परेशानियां साझा कर पाती हैं। कुछ महिलाएं इन लड़कों को कॉफी या किताबें भी गिफ्ट करती हैं। हालांकि, इस ट्रेंड को लेकर विवाद भी है। कुछ लोग इसे फिजिकल डिजायर का बहाना बताते हैं, जबकि एक वकील ने चेताया कि कुछ लोग इसे सेक्शुअल हैरासमेंट का जुगाड़ बना सकते हैं। फिर भी, चीन के बड़े शहरों में यह ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है।

# तकनीक और श्रद्धा का अनोखा मेल

## मंदिर में लोग मूर्ति को मोबाइल से टच करके लेते हैं आशीर्वाद

**निज संवाददाता :** हर दिन सोशल मीडिया पर कभी मजेदार वीडियो, तो कभी अजीब परंपरा या रिवाज के वीडियो वायरल होते रहते हैं। हाल ही में चीन से जुड़ा एक वीडियो इंटरनेट पर छया हुआ है, जिसमें एक शख्स मंदिर में भगवान की मूर्ति के पास जाकर अपने मोबाइल से टच करता दिख रहा है। वीडियो देखने वालों को पहले तो लगा कि शायद वह भगवान से ऑनलाइन पैसे मांग रहा हैं या मूर्ति से मोबाइल चार्ज कर रहा है, लेकिन हकीकत इससे बिल्कुल अलग और दिलचस्प है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक चीन में यह एक आम धार्मिक प्रथा बन चुकी है, जो आधुनिक तकनीक और परंपरा का अनोखा मेल दिखाती है। चीन के कई बौद्ध और ताओवादी मंदिरों में अब डिजिटल दान प्रणाली लागू की गई है। मूर्तियों या मंदिर के दान-पात्रों के पास क्यूआर कोड लगाए गए हैं। भक्त इन कोड्स को अपने फोन से स्कैन करके मंदिर या ट्रस्ट को ऑनलाइन पैसे भेज सकते हैं। ठीक वैसे ही जैसे भारत में लोग यूपीआई, पेटीएम या गूगल पे से दान करते हैं। पिछले कुछ सालों में चीन में नकदी का इस्तेमाल कम हुआ है। अलीपे और वीचैट पे जैसे ऐप्स ने देश के हर कोने में डिजिटल लेनदेन को आसान बना दिया है। मंदिरों ने भी इसी रफ्तार से अपने तरीकों को आधुनिक बना लिया। भक्तों के लिए दान करना पहले से ज्यादा सुविधाजनक हो गया, न जेब में नकद रखने की झंझट, न छुट्टे की जरूरत।

माना जाता है कि यह प्रथा सबसे पहले हांगझोऊ और बीजिंग के कुछ बड़े मंदिरों में शुरू की गई थी। वहां क्यूआर कोड स्कैन करने के बाद भक्त दान राशि चुन सकते हैं, कुछ युआन से लेकर सैकड़ों युआन तक। इसके बाद स्क्रीन पर एक आशीर्वाद संदेश या ''शुभकामना कोट'' भी दिखता है। अब सवाल उठता है, लोग स्कैन करने के बाद मूर्ति को मोबाइल से हल्के से ''टच'' क्यों करते हैं? यह दरअसल एक प्रतीकात्मक इशारा है, चीन में बहुत से लोग मानते हैं कि भगवान के प्रति श्रद्धा दिखाने का यह एक नया तरीका है-जैसे भारत में लोग मंदिर में दीया जलाते हैं या प्रसाद चढ़ाते हैं। जब भक्त मोबाइल को मूर्ति के पास हल्के से छूते हैं, तो यह ''डिजिटल भेंट'' देने के बाद आशीर्वाद लेने का एक संकेत होता है। इसका मतलब यह नहीं कि लोग सच में मानते हैं कि भगवान मोबाइल से पैसे ले रहे हैं। यह सिर्फ सम्मान और भक्ति का एक आधुनिक रूप है। जब इस तरह के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होते हैं, तो कई लोग इसे गलत समझ लेते हैं। कुछ मजाक में कहते हैं कि अब भगवान भी ऑनलाइन पेमेंट लेने लगे हैं''या''चीन में भगवान का यूपीआई चल रहा है''। लेकिन सच्चाई यह है कि यह सिर्फ मंदिर की डिजिटल दान प्रणाली का हिस्सा है। न कि कोई अंधविश्वास। चीन की यह परंपरा दिखाती है कि कैसे तकनीक और श्रद्धा एक साथ चल सकती हैं। पुराने धार्मिक विश्वासों में आधुनिक सुविधाएं शामिल कर लोगों के लिए पूजा और दान को आसान बनाया जा रहा है। आज चीन के कई धार्मिक स्थलों पर भक्त मोबाइल से दान करते हैं, डिजिटल मोमबत्तियां जलाते हैं और ऑनलाइन आशीर्वाद संदेश प्राप्त करते हैं, यह सब तकनीक की मदद से। इस तरह की घटनाएं हमें यह दिखाती हैं कि आस्था का रूप बदल सकता है, लेकिन भावना वही रहती है, चाहे दान नकद से किया जाए या क्युआर कोड से, श्रद्धा हमेशा दिल से ही होती है।

## धर्म

# बुरी नजर और नकारात्मक ऊर्जा से बचाते हैं मंगलसूत्र में काले मोती

## महिलाओं के 16 श्रृंगार का हिस्सा है यह

**निज संवाददाता :** हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार विवाह में दुल्हन को मंगलसूत्र पहनाए बिना शादी अधूरी माना जाती है। यह महिलाओं के 16 श्रृंगार में से एक होता है और इस वजह से भी इसका धर्म शास्त्रों में विशेष महत्व माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि मंगलसूत्र सुहागिन महिलाओं के सुहाग की रक्षा करता है। वहीं, धार्मिक मान्यता यह भी है कि काला रंग अशुभ होता है। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर फिर मंगलसूत्र के मोती काले क्यों होते हैं और इनका क्या महत्व है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, मंगलसूत्र में काले मोती बुरी नजर और नकारात्मक ऊर्जा से बचाने के लिए महत्वपूर्ण माने गए हैं। यह पति और पत्नी के बीच शक्ति और संतुलन बनाए रखने, संबंध को मजबूत करने और पति के स्वास्थ्य की रक्षा करने का भी प्रतीक होते हैं। इसके अलावा, काले मोती देवी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं और विवाह को स्थिर बनाते हैं। मान्यता है कि मंगलसूत्र के काले मोती बुरी आत्माओं और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में काम करते हैं। ऐसा माना जाता है कि मंगलसूत्र के काले मोती बुरी नजर से बचाते हैं और पति-पत्नी के बीच शांति और प्रेम बनाए रखते हैं। मंगलसूत्र के काले मोती देवी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो शक्ति और सुरक्षा का प्रतीक माने गए हैं। कुछ मान्यताओं के अनुसार, मंगलसूत्र के काले मोती पति के स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं और तनाव को कम करने में मदद कर सकते हैं। सोने के मंगलसूत्र में लगे काले मोतियों के होने की वजह यह भी है कि काला रंग नकारात्मक तरंगों को अवशोषित करता है, जिससे विवाह को नुकसान से बचाया जा सकता है। कहते हैं कि मंगलसूत्र के काले मोती, शनि ग्रह का प्रतीक माने जाते हैं और ये मोती पत्नी-पति पर आने वाली शनि की बाधाओं को अपने ऊपर ले लेते हैं, जिससे पति के जीवन में खुशहाली बनी रहती है।

# खुले आसमान के नीचे पढ़ाई

## फरक्का के आदिवासी गांव में शिक्षा की रोशनी जला रही है कमला की पाठशाला

**निज संवाददाता :** आदिवासी बहुल गांव। गरीब परिवारों के बच्चों को स्कूल जाने का मौका भी नहीं मिलता। झारखंड से सटे मुर्शिदाबाद जिले के फरक्का ब्लॉक में फीडर नहर के पश्चिमी किनारे बहादुरपुर ग्राम पंचायत के इस बारोमसिया गांव में शिक्षा की रोशनी लाने के लिए कमला मद्दी नाम की एक गृहिणी आगे आई हैं। कमला दीदी ने अपने घर के आंगन में एक पाठशाला खोली है और छोटे बच्चों को पढ़ा रही हैं। अब उनकी पाठशाला में 45 बच्चे हैं। पाठशाला हर दोपहर लगती है। कमला देवी अलचिकी से लेकर सांथाली और यहां तक कि बांग्ला भी सिखाती हैं। वह आदिवासी समुदाय में शिक्षा की रोशनी लाने के लिए बिना किसी मेहनताने के लगातार काम कर रही हैं। फरक्का ब्लॉक के बहादुरपुर ग्राम पंचायत के बारोमसिया गांव के बाबूजी टुडू। वह पत्थर तोड़ने का काम करते हैं। 2011 में बाबूजी टुडू ने बीरभूम जिले के राजनगर जीतूपुर गांव की एक लड़की कमला मद्दी से शादी की। गांव में ज़्यादातर आदमी और औरतें पत्थर तोड़ने और धान काटने का काम करते हैं। कमला मद्दी गांव की अकेली गृहिणी हैं जिन्होंने हायर सेकेंडरी तक पढ़ाई की है। कमला भी परिवार चलाने के लिए पत्थर तोड़ने और धान काटने के काम में अपने पति की मदद करती हैं। उनकी दो बेटियां हैं। सबसे बड़ी बेटी नबग्राम पुलिस स्टेशन के चाणक्य हॉस्टल में पांचवीं क्लास में पढ़ रही है। छोटी बेटी नर्सरी में एक लोकल प्राइवेट स्कूल में पढ़ रही है। गांव में पढ़ाई के साधन नहीं थे, इसलिए कमला मद्दी ने इलाके के बच्चों को खुद पढ़ाने का फैसला किया। उन्होंने गांव वालों को अपनी बात भी बताई। गांव वालों ने साफ कर दिया कि वह कोई फीस नहीं दे सकतीं। बाद में गांव वालों की सहमति से उन्होंने 6 जनवरी, 2024 को अपने घर के आंगन में खुले आसमान के नीचे यह बिना पैसे वाला स्कूल शुरू किया। एक-दो से बढ़कर अब उस स्कूल में हर दोपहर 45 बच्चे पढ़ने आते हैं। कमला मद्दी ने कहा-गांव के बच्चों को पढ़ाया जाता है। अगर बच्चों को पढ़ाई का सही ज्ञान मिलेगा, तो समाज आगे बढ़ेगा। बहादुरपुर ग्राम पंचायत के डिप्टी हेड बदीरुद्दीन शेख ने कहा-आदिवासी समुदाय में शिक्षा की रोशनी लाने में कमला मद्दी का योगदान बेमिसाल है। एक पिछड़े समाज की पढ़ी-लिखी प्रतिनिधि के तौर पर, वह शिक्षा के महत्व को समझते हुए आगे आई हैं। यह दूसरों के लिए भी प्रेरणा है।

# शख़्सियत : प्रतिष्ठित उद्योगपति जुगल किशोर गोयल

जुगल किशोर गोयल व्यापारिक जगत के एक प्रतिष्ठित और दूरदर्शी व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपने उत्कृष्ट नेतृत्व और नवाचार के बल पर उद्योग जगत में विशिष्ट स्थान बनाया है। व्यवसाय में सफलता के साथ-साथ वे सामाजिक दायित्वों को भी समान महत्व देते हैं। व्यापारिक जगत में नाम कमाने और पारिवारिक जिम्मेदारियों से निवृत होने के बाद गोयल दंपति ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति सजगता दिखलाई। आप दोनों और आपका पूरा परिवार निम्न सेवा कार्यों में अपना पूर्ण समर्पण देता आया है : व्यापार के माध्यम से रोजगार, धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से सनातन वैदिक-धर्म का निरंतर प्रचार-प्रसार, गुरुकुलों के सैंकड़ों शिक्षार्थियों की व्यवस्था, बौद्धिक और स्वाध्याय लोगों के लिए पुस्तकों का प्रकाशन और निःशुल्क वितरण, धर्मार्थ चिकित्सालय की स्थापना व संचालन की व्यवस्था, निः शुल्क हेल्थ चेक-अप कैंप, रक्तदान शिविर, निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा, शारीरिक रूप से दिव्यांग जनों के लिए कृत्रिम हाथ, पैर व शारीरिक अंग का वितरण, सामाजिक जागरूकता के कार्यों में अपना पूर्ण समर्थन और आर्थिक सहयोग। जुगल किशोर गोयल जी और सुषमा देवी गोयल के गृहस्थ आश्रम में 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर उनके पुत्रों ने अपने स्वजनों और आत्मीयजनों के साथ पारिवारिक, धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए हैं। जीवन यात्रा के अनुभव को सहजते हुए सौभाग्यशाली दंपति ने अपने विवाह के स्वर्णगांठ के शुभ-अवसर 30 नवंबर 2025 रविवार को शारीरिक रूप से दिव्यांग जनों के लिए अपने उद्यम संस्थान के द्वारा निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रतिस्थापन शिविर का आयोजन किया है। गंभीर समाचार की ओर से डॉ अरविन्द सेठ को दिए गए एक साक्षात्कार में जुगल किशोर गोयल और सुषमा देवी गोयल ने अपनी जीवन-यात्रा साझा की।

**जीवनयात्रा :**

मेरा जन्म वर्ष 1953 में सिलीगुड़ी के एक सुदूर गांव में हुआ। हमारा परिवार प्रारम्भ से ही सम्पन्न था। दस भाई-बहनों के साथ संयुक्त परिवार में बिताया गया बचपन मेरे जीवन की सबसे सुंदर स्मृतियों में से एक है। आपसी प्रेम, सहयोग और पारिवारिक संस्कारों से भरा वह वातावरण आज भी हृदय को आनंद से

भर देता है।

मेरी प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्च अध्ययन तक सब कुछ सिलीगुड़ी में ही सम्पन्न हुआ। बी.कॉम. पूरा करने के बाद मैंने वहीं से एल.एल.बी. की पढ़ाई की। कॉलेज के समय से ही मैं अपने पैतृक व्यवसाय से जुड़ गया था, जिसने मुझे व्यवहारिक जीवन, अनुशासन और जिम्मेदारी का वास्तविक पाठ सिखाया। मेरे माता-पिता अत्यंत धार्मिक स्वभाव के थे और दान-पुण्य को जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग मानते थे। उन्हीं के संस्कारों से मेरे भीतर धर्म, सेवा और सदाचार के प्रति गहरी आस्था विकसित हुई, जो आज तक मेरे जीवन का आधार है। सन् 1975 में मेरा विवाह कोलकाता के प्रतिष्ठित आर्य समाजी, पुष्करलाल की सुपुत्री सुषमा से हुआ। उनके सत्प्रभाव और प्रेरणा से मेरे विचार आर्य समाज के सिद्धांतों के और अधिक निकट हुए। सुषमा जैसी धर्मनिष्ठ, विनम्र, कुशल और आदर्श गृहिणी का साथ पाकर मेरा जीवन वास्तव में पूर्ण हो गया। उन्होंने हमारे तीनों बच्चों का पालन-पोषण अत्यंत प्रेम, समर्पण और सुसंस्कारों के साथ किया। आज तीनों ही अपने-अपने क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रहे हैं, जो हमारे लिए अपार संतोष और गर्व का कारण है।

सन् 1985 में मैं सिलीगुड़ी से कोलकाता आ गया और यहां भी दृढ़ निश्चय और परिश्रम के साथ अपना नया व्यवसाय आरम्भ किया। अपने पूरे कार्यकाल में मैंने यही सीखा कि किसी भी व्यापार में आर्थिक लाभ के साथ-साथ ईमानदारी, समय-पालन और विश्वास सबसे आवश्यक तत्व होते हैं। इन्हीं सिद्धांतों को आधार बनाकर मैंने जीवन भर कार्य किया।व्यवसाय के साथ-साथ धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में रुचि मेरे जीवन का सदैव महत्त्वपूर्ण हिस्सा रही है और आज भी मैं इन गतिविधियों में उत्साहपूर्वक सक्रिय रहता हूं। सुषमा देवी गोयल अपने वैवाहिक जीवन के संस्मरण में बताती हैं कि किसी भी परिस्थिति में मैंने परिवार को ही प्राथमिकता दी। सदैव घर के बड़े-बुजुर्गों और पति की सम्मति से ही कोई कार्य किया। गृहस्थ से जुड़े किसी भी निर्णय में श्रीमान जी मुझसे अवश्य ही विचार-विमर्श करते हैं। इससे सभी जिम्मेदारियों के प्रति हमारा कर्तव्यबोध और कार्य सिद्धि सुख और शुभ फल देने वाली हुए। जीवन के लंबे खट्टे-मीठे, सुख-दुःख भरे अनुभव से हमने यही जाना की आपसी सामंजस्य ही सुखी-गृहस्थ का आधार है।

सादा जीवन, उच्च विचार। सभी से करो, सरल व्यवहार।।

# नीलम सोनी: महिला सशक्तिकरण की नई पहचान

**निज संवाददाता :** नीलम सोनी आज महिला सशक्तिकरण की उस प्रेरणादायक पहचान के रूप में सामने आई हैं, जहां संकल्प, संवेदना और कार्यसमर्पण मिलकर सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त मॉडल गढ़ते हैं। उन्होंने न केवल स्वयं आगे बढ़कर आत्मनिर्भरता का मार्ग अपनाया, बल्कि अनेक संस्थाओं के साथ जुड़कर स्वयंसेवी महिला समूहों के लिए सुलभ : 1. सरकारी अवसरों, 2. गैर-सरकारी अवसरों और 3. बाज़ार मांग के अवसरों को उपलब्ध करा उनके जीवन में गौरवपूर्ण सामाजिक पहचान और आर्थिक स्वतंत्रता के द्वार भी खोले। उनकी सोच और कार्यशैली यह दर्शाते हैं कि यदि किसी महिला को अवसर, मार्गदर्शन और सुरक्षा का माहौल मिल जाए तो वह स्वयं भी तरक़्क़ी कर सकती है और अपने साथ समाज को भी आगे बढ़ा सकती है। नीलम सोनी का विजन ऑर्यम (स्वयंसेवी महिला समूह की आर्थिक स्वतंत्रता का मंच) वर्तमान समय में, नीलम सोनी -- टीम ऑर्यम के अंतर्गत विशेषज्ञ पेशेवर और आर्थिक सलाहकारों की सहायता से स्वयंसेवी महिला समूह की पहचान और आर्थिक उन्नति के लिए सतत प्रयासरत

हैं। यूरोपीय देशों की तुलना में दक्षिणी एशिया प्रायद्वीप के देश जैसे भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि संसाधनों से पूर्ण होते हुए भी चीन, जापान और कोरिया जैसे देशों की तुलना में आर्थिक रूप से बहुत पिछड़े हैं।

**इस पिछड़ेपन के पीछे निम्न मुख्य कारण हैं :**

अनुभवी नेतृत्व का अभाव, कौशल पिछड़ापन, उपलब्ध अवसरों की जानकारी का अभाव, व्यवस्थित आर्थिक मॉडल की अनुपस्थिति, व्यवसाय/उद्योग प्रबंधन शिक्षा के प्रति उदासीनता, प्रचार तंत्र के उपलब्ध संसाधनों का अव्यवस्थित और भ्रामक प्रबंधन, आर्थिक समन्वय की कमी, समय प्रबंधन के प्रति असंवेदनशीलता, दीर्घकालिक विज़न का अभाव, आर्थिक आवश्यकताओं से जुड़े लोगों का राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आयोजनों में अपने सामर्थ्य को नष्ट करना। टीम ऑर्यम स्वयं सेवी महिला समूहों को अनुभवी नेतृत्व के साथ सभी पेशेवर सहयोग उपलब्ध करवाता है।

समय प्रबंधन के साथ टीम मैनेजमेंट की भावना और समूहों की अपनी पहचान को भी बढ़ावा देता है। 21वीं सदी के वर्तमान युग में, भारत देश के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के परिवारों में अभी भी महिलाओं को कार्य-उद्यम करने से रोका जाता है। इसका मुख्य कारण भारतवासियों में आर्थिक संचेतना और जागरूकता का अभाव है। इस कारण ऑर्यम की अनुभवी टीम समस्या के मुख्य जड़ को सुलझाने हेतु दीर्घकालिक कार्यक्रमों के माध्यम से महिला समूहों के सभी परिवारिक सदस्यों को भी: जागरूकता कार्यक्रमों, घरेलू हिंसा के प्रति सहायता, शिक्षा-कौशल विकास कार्यक्रमों, मानसिक मनोबल बढ़ाने के आयोजनों से जोड़ता आया है।

## मनोरंजन

### धर्मेंद्र के चाहने वालों को मिलेगा बड़ा तोहफा

# 4-के वर्जन में 12 दिसंबर को फिर से रिलीज होगी 'शोले'

**निज संवाददाता :** धर्मेंद्र की कल्ट फिल्म शोले एक बार फिर से सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। रमेश सिप्पी के निर्देशन में बनी यह फिल्म पर्दे पर कई बार रिलीज हो चुकी है और एक बार फिर ये फिल्म रिलीज होने जा रही है। लेकिन बता दें इस बार ब्लॉकबस्टर फिल्म को देशभर में 1500 स्क्रीन्स पर 4-के वर्जन में री-रिलीज किया जाएगा। पर्दे पर एक बार फिर जय-वीरू की शानदार जोड़ी देखने को मिलेगी, लेकिन असल जिंदगी में जय-वीरू की जोड़ी टूट चुकी है। बीते 24 नवंबर को शोले में वीरू का रोल निभाने वाले धर्मेंद्र देओल दुनिया को अलविदा कह चुके हैं। फिल्म शोले अपनी कहानी से ज्यादा फिल्म के किरदारों की वजह से जानी जाती है। फिल्म में जय-वीरू की दोस्ती, वीरू और बसंती का रोमांस, बसंती की मौसी लीला मिश्रा की कॉमेडी और ठाकुर और गब्बर की दुश्मनी। इन सभी पहलुओं और कहानियों ने मिलकर फिल्म को हिंदी सिनेमा की सबसे ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक बनाया है। बता दें, शोले के चार आइकॉनिक किरदारों में शामिल वीरू, ठाकुर और गब्बर अब नहीं रहे हैं। लेकिन वो आज भी दर्शकों के दिलों में बसते हैं। धर्मेंद्र के फैंस के लिए शोले को 12 दिसंबर को पर्दे पर एक बार फिर रिलीज किया जाएगा। बता दें कि फिल्म में जय और वीरू के किरदार को काफी पसंद किया

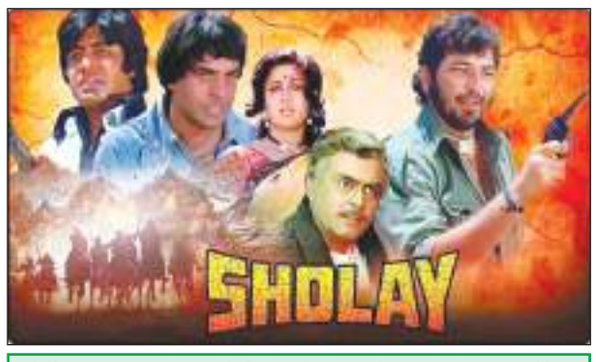


**शोले का यह पुनरावलोकित संस्करण केवल दृश्य रूप में ही नहीं, बल्कि श्रवण और देखने के अनुभव में भी बेहतर बनाया गया है। इसे फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन की निगरानी में 4 और 5.1 गुणवत्ता में पुनर्स्थापित किया गया है, ताकि दर्शकों को वही दृश्य गहनता और ध्वनि स्पष्टता मिल सके, जिसकी कल्पना निर्देशक रमेश सिप्पी ने मूल रूप से की थी। इस री रिलीज़ की सबसे बड़ी खासियत है उसका मूल, अनकट क्लाइमेक्स, जिसे शुरूआत में सेंसर बोर्ड (सीबीएफसी) ने 'अति हिंसात्मक' मानते हुए कट करने को कहा था। उस क्लाइमेक्स में ठाकुर (संजीव कुमार) गबर सिंह (अमजद खान) को स्पाइकेड जूतों की मदद से मारता है। एक दृश्य जिसे दशकों तक दर्शकों ने बड़े पर्दे पर नहीं देखा था।**

गया। पर्दे पर एक बार फिर जय-वीरू की शानदार जोड़ी देखने को मिलेगी। फिल्म के जय-वीरू का साथ छूट गया है। अब असल जिंदगी में वीरू यानी धर्मेंद्र ने जय (अमिताभ बच्चन) का साथ छोड़ दिया है। आज बिना वीरू के जय की कल्पना नहीं की जा सकती। वैसे, फिल्म शोले को कई बार पर्दे पर रिलीज किया गया है, लेकिन इस साल फिल्म को अब दोबारा पर्दे पर रिलीज किया जा रहा है। बता दें फिल्म सबसे पहले 1975 में रिलीज हुई थी, जिसके बाद इसे कई बार अलग-अलग फॉर्मेट में पर्दे पर लाया गया। साल 2004 में फिल्म 70 मिमी रीस्टोर वर्जन के साथ, साल 2014 में फिल्म 3डी वर्जन के साथ और अब फिल्म को साल 2025 में 4- वर्जन के साथ रिलीज किया जाएगा।

# धर्मेंद्र : एक युग की विदाई, एक हीरो का अमरत्व

***डॉ. सत्यवान सौरभ***

हिंदी सिनेमा ने अपने लंबे सफर में कई सितारों को जन्म दिया, पर उनमें कुछ ऐसे हैं जिनकी रोशनी समय के साथ कम नहीं होती, बल्कि हर पीढ़ी की आंखों में एक नई चमक लेकर जीवित रहती है। धर्मेंद्र उन्हीं दुर्लभ सितारों में से थे, जो सिर्फ अभिनेता नहीं थे, बल्कि भारतीय समाज के भावनात्मक ताने-बाने का हिस्सा बन चुके थे। उनका जाना एक ऐसी खामोशी छोड़ गया है, जिसे शब्दों में बांध पाना मुश्किल है। वे सिर्फ पर्दे पर दिखने वाली एक छवि नहीं थे; वे एक ऐसे इंसान थे, जिनकी गर्माहट और विनम्रता ने दर्शकों को अपने परिवारों के किसी सदस्य की तरह उनसे जोड़ दिया था। धर्मेंद्र की कहानी किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं। पंजाब के एक छोटे से गांव नसराली से शुरू हुई यह यात्रा संघर्ष, मेहनत और सपनों की शक्ति का जीवंत उदाहरण है। एक साधारण किसान परिवार में जन्मा लड़का जब फिल्मों की दुनिया की चमक-दमक में पहुंचता है, तो आमतौर पर व्यक्ति अपनी मूल पहचान खो बैठता है, लेकिन धर्मेंद्र ऐसे नहीं थे। उन्होंने अपनी जड़ों को कभी नहीं छोड़ा। वही सादगी, वही देसीपन, वही अपनापन उनकी हर मुस्कान में दिखाई देता था। यही कारण है कि वे सिर्फ 'स्टार' नहीं बने, वे 'दिलों का हीरो' बने। 1960 के दशक में जब उन्होंने सिनेमा के परदे पर कदम रखा, तब दर्शकों ने यह अंदाज़ा नहीं लगाया होगा कि यह युवक अगले कई दशकों तक हिंदी फिल्मों का सबसे प्रिय चेहरा बनने वाला है। शुरुआत भले ही धीमी रही हो, पर उनकी आंखों में मौजूद मासूमियत और व्यक्तित्व में छिपा गहरा आत्मविश्वास बहुत जल्द ही लोगों के दिलों तक पहुंच गया। उनकी शुरुआती फिल्मों ने यह दिखाया कि उनमें संवाद की सरलता, भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति और अपने किरदार के प्रति ईमानदार दृष्टिकोण जैसी विशिष्ट खूबियां हैं। समय के साथ धर्मेंद्र ने दिखा दिया कि वे सिर्फ एक रोमांटिक हीरो नहीं, बल्कि हर शैली में फिट बैठने वाले अभिनेता हैं। उन्होंने अभिनय के हर रंग को जीयारोमांस की कोमलता, कॉमेडी की सहजता, एक्शन की तीव्रता और भावुक दृश्यों की गहराई। ''अनुपमा'' और ''अनपढ़'' में उनकी रोमांटिक छवि दर्शकों का दिल चुरा लेती थी, तो ''मेरा गांव मेरा देश'' और ''शोले'' में उनका एक्शननुमा अंदाज़ उन्हें 'ही-मैन' की उपाधि दिलाता था। यह उपाधि किसी फैशन के कारण नहीं, बल्कि उनके स्वाभाविक दृढ़ व्यक्तित्व का प्रमाण थी। ''शोले'' का वीरू भारतीय सिनेमा के इतिहास का वह चरित्र है, जो किसी परिचय का मोहताज नहीं। वीरू की मस्ती, दोस्ती, बेफिक्री और दिल की गहराई ने इस किरदार को अमर बना दिया। धर्मेंद्र कोई भूमिका निभाते नहीं थे, वे उसे जीते थे। यही कारण

स्मृति-शेष 1935-2025

*धर्मेंद्र का जाना सिर्फ एक अभिनेता का जाना नहीं, बल्कि एक युग का शांत हो जाना है। गांव की मिट्टी से उठकर सिनेमा के आसमान तक पहुचे इस कलाकार ने अपने अभिनय से नहीं, बल्कि अपनी सादगी और मानवीयता से करोड़ों दिल जीते*

है कि वीरू आज भी दर्शकों के चेहरों पर मुस्कान ला देता है। लेकिन धर्मेंद्र का जादू सिर्फ वीरू तक सीमित नहीं था। ''चुपके चुपके'' में उनकी गंभीर-स्वभाव वाली कॉमेडी यह साबित करती है कि हास्य अभिनय हमेशा उछल-कूद या अतिरंजना से नहीं आता; वह शालीनता और समयबद्ध संवादों से भी पैदा हो सकता है। धर्मेंद्र इस बात का जीता-जागता उदाहरण थे। उनके अभिनय का आधार हमेशा 'सच्चाई' रहा। वे अभिनय नहीं करते थे, वे सत्य को अभिव्यक्त करते थे। यह सत्य कभी प्रेम की कोमलता के रूप में जागता था, कभी संघर्ष की तल्ख़ी के रूप में। आज के समय में जब अभिनय तकनीक और बाहरी सजावट पर अधिक निर्भर होता जा रहा है, धर्मेंद्र हमें याद दिलाते हैं कि अभिनय का सबसे बड़ा केंद्र 'दिल' होता है। यही वह विशेषता है, जिसने उनकी फिल्मों को समय की सीमाओं से मुक्त कर दिया। धर्मेंद्र की एक और महानता थीउनका जमीन से जुड़ाव। उन्होंने कभी खुद को महान या बड़ा साबित करने की कोशिश नहीं की। सैकड़ों फिल्मों की सफलता, लाखों प्रशंसक और दशकों की लोकप्रियता के बाद भी वे एक साधारण ग्रामीण की तरह बात करते थे। उनकी विनम्रता किसी बनावटी विनम्रता का परिणाम नहीं थी; वह उनके स्वभाव का हिस्सा थी। यही कारण है कि वे उद्योग के भीतर और बाहर दोनों जगह समान आदर के पात्र बने रहे। धर्मेंद्र ने अपनी निजी और राजनीतिक जिंदगी में भी अपने मूल्यों को नहीं छोड़ा। वे वर्ष 2004 में लोकसभा के लिए चुने गए और अपने तरीके से जनता की सेवा की। हालांकि वे राजनीति में गहराई से सक्रिय नहीं रहे, लेकिन यह साफ समझ आता है कि वे समाज के प्रति एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका को समझते थे। उनका चरित्र उतना ही सीधा और स्पष्ट था जितना उनका अभिनय। उनकी जीवनशैली की सादगी ने भी लोगों को हमेशा प्रभावित किया। मुंबई की भीड़-भाड़ से दूर उनका फार्महाउस, धरती पर काम करना, खेतों को सींचना, पशुओं के साथ समय बिताना, सब उनकी आत्मा को सुकून देते थे। यह उस अभिनेता की तस्वीर है जो चमकते पर्दे से परे, असली जिंदगी में प्रकृति की गोद में अपने आप को पूरा महसूस करता था। यह गुण किसी अभिनेता में शायद ही देखने मिलता हो। आज जब हम उन्हें स्मरण करते हैं, तो उनके चेहरे की वह सहज मुस्कान तुरंत आंखों के सामने आ जाती है। ऐसा लगता है जैसे वह अभी भी किसी दृश्य की तैयारी कर रहे हों, या किसी इंटरव्यू में अपनी प्रसिद्ध विनम्रता के साथ कह रहे हों''अरे, मैं कौन सा बड़ा कलाकार हूं, बस अपनी कोशिश करता हूं।'' उनकी यह बात ही उन्हें बड़ा बनाती थी।

धर्मेंद्र का जाना भारतीय सिनेमा के लिए सिर्फ एक कलाकार की विदाई नहीं, यह एक युग का अवसान है। वह युग जिसमें सादगी, भावनाएं और मानवीयता अभिनय की रीढ़ हुआ करती थीं। वह दौर जब सिनेमा सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज, परिवार और रिश्तों का आईना होता था। धर्मेंद्र उस आईने की सबसे चमकदार किरण थे। लेकिन हर महान कलाकार की तरह धर्मेंद्र भी यह सिद्ध करके गए हैं कि शरीर भले चला जाए, कला कभी नहीं जाती। उनकी आवाज़, उनकी हंसी, उनकी आंखों की चमक, उनकी फिल्मों के दृश्ययह सब कहीं न कहीं हमारे भीतर जीते रहेंगे। वह इसलिए नहीं कि उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने लोगों के दिलों में जगह बनाई। सिनेमा की असली शक्ति यही है जब दर्शक अभिनेता को सिर्फ अभिनेता न मानकर परिवार का हिस्सा मानने लगें। महान कलाकार कभी सचमुच नहीं जाते। धर्मेंद्र भी नहीं गए। वे हमारे गीतों में हैं, संवादों में हैं, फिल्मों में हैं, और सबसे बढ़कर, हमारे दिलों में हैं।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइब रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)